कामियाबी क्या है?

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी (रह०)

कामियाबी क्या है?

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी (रह०)

Maktab Ashraf

© इदारा

इस पुस्तक की नक़ल करने या छापने के उद्देश्य मे किसी पृष्ठ या शब्द का प्रयोग करने, रिकॅार्डिंग, फोटो कॉपी करने या इसमें दी हुई किसी भी जानकारी को एकत्रित करने के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

कामियाबी क्या है?

लेखक
हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी (रह०)

अनुवादक
अहमद नदीम नदवी

Kãm-yãbî Kiya Hai?

प्रकाशन : 2013

ISBN 81-7101-416-X

TP-177-13

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय | **पृष्ठ**

विषय पृष्ठ

Maktab Ashraf

विषय	पृष्ठ

Maktab Ashraf

विषय	पृष्ठ

Maktab Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मौत के बाद भी एक ज़िंदगी है

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गों! दुनिया के अन्दर ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े दो हैं—

1. एक वह तरीक़ा है जो अल्लाह ने तज्वीज़ करके दिया है,

2. दूसरा तरीक़ा वह है, जो इंसान ख़ुद तज्वीज़ करे। इंसान जो तरीक़ा तज्वीज़ करेगा, वह सिर्फ़ आज के ज़माने को सामने रखकर तज्वीज़ करेगा। उसे जितना नफ़ा दिखाई देगा, उसके बाक़ी रखने की फ़िक्र करेगा और जितना नुक़्सान दिखाई देगा, उसके दूर करने की फ़िक्र करेगा, लेकिन आगे जो ज़माना उसके सामने आता चला जाएगा, तो फिर उसकी राय, उसकी तदबीर और उसका तरीक़ा बदलता जाएगा, यहां तक कि आदमी की मौत आ जाए, तो मौत के बाद हालात ख़त्म नहीं होते, बल्कि हालात का इन्तिज़ार करने की जो ताक़त थी, वह ख़त्म हो जाती है। आम तौर से यह समझा जाता है कि मौत आई तो हालात ख़त्म हो गए, ख़ुशहाली ख़त्म हो गई और बदहाल आदमी की बदहाली ख़त्म हो गई, जो बीमार था, उसकी बीमारी ख़त्म हो गई और जो भूखा था, उसकी भूख-प्यास ख़त्म हो गई और जो ख़ूब खाता-पीता था, उसका ख़ूब खाना-पीना ख़त्म हो गया, इज़्ज़त वाले की इज़्ज़त ख़त्म हो गई और ज़िल्लत वाले की ज़िल्लत ख़त्म हो गई, इसलिए जब मौत आई तो आदमी की लाश को क़ब्र के अन्दर दफ़न कर देते हैं। थोड़े दिनों बाद वह मिट्टी हो जाता है, तो आगे दिखाई नहीं देता।

आम दुनिया, बल्कि पूरी दुनिया का ज़ेहन यह है कि मर गए तो बात ख़त्म हो गई, हालात सारे ख़त्म हो गए, लेकन ऐसा नहीं है। हमारा और तुम्हारा पैदा करने वाला ख़ुदा, जिसने अपनी क़ुदरत से तीन-तीन अंधेरों में मां के पेट के अन्दर इन्सान को बनाया, जबकि वहां पर कोई रोशनी भी नहीं थी, मां का पेट था, बच्चादानी थी और उसके अंदर एक झिल्ली थी, झिल्ली के अन्दर लिपटा हुआ बच्चा था और इंसान के सारे अंग अल्लाह ने बनाए। वह बनाने वाला ख़ुद यह बता रहा है कि मौत के बाद एक लम्बी-चौड़ी ज़िंदगी आने वाली है जो मरने वाले से पहले मरने वाले को दिखाई नहीं देती, लेकिन यक़ीनन वह ज़िंदगी आने वाली है।

इंसान की आख़िरी मंज़िल

इंसान के ऊपर चार मंज़िलें हैं—

1. एक मंज़िल तो है मां की पेट की,

2. दूसरी मंज़िल है, दुनिया के पेट की,

3. तीसरी मंज़िल है क़ब्र के पेट की,

4. चौथी मंज़िल है आख़िरत की और वह आख़िरी मंज़िल है, इसके बाद कोई पांचवीं मंज़िल नहीं है। आख़िरत में जो जगह उसके लिए राहत की या तक्लीफ़ की तै हो गई, तो वह उसी में रहेगा। यह बात अलग है कि कोई ईमान वाला अपनी बद-आमालियों की वजह से जहन्नम में गया तो जहन्नम के अन्दर वह पाक व साफ़ होकर जन्नत में चला जाएगा, लेकिन बग़ैर ईमान के जो आदमी होगा, जिसके अन्दर ईमान नहीं होगा और वह कुफ़्र वाला, शिर्क

वाला होगा। वह जब जहन्नम में जाएगा, तो वह उसकी आख़िरी मंज़िल होगी, इसके बाद वह निकलेगा नहीं।

अख़्तियार का होना और अख़्तियार का न होना

मां के पेट के अन्दर इंसान को ज़र्रा बराबर अख़्तियार नहीं था। लड़का बनना या लड़की बनना, काला बनना या गोरा बनना, ख़ुद इंसान के बनने वाले का भी अख़्तियार नहीं था और उसके मां-बाप को भी उसका अख़्तियार नहीं था। यह बिल्कुल हमारे अख़्तियार से बाहर है। अल्लाह ने मां के पेट के अंदर इंसान को बनाया। इसके बाद दूसरी मंज़िल है। दुनिया की जो मंज़िल है, उस मंज़िल में अल्लाह ने उस इंसान को हल्का सा अख़्तियार दिया।

यह अख़्तियार भी अजीब चीज़ है। अल्लाह ने दुनिया में इंसान को हल्का-सा भले और बुरे का अख़्तियार दे दिया, जैसे आम की गुठली बोएगा, तो आम का पेड़ तैयार होगा और इमली का बीज बोएगा तो इमली का पेंड़ तैयार होगा। इसी तरह से यह इंसान यहां पर भला करे या बुरा करे, दोनों बातों में अख़्तियार है।

ये हाथ अल्लाह ने दिए हैं। जब तक रूह इंसान के जिस्म के अन्दर मौजूद है तो इस हाथ पर इंसान को अख़्तियार है कि इस हाथ से सदक़ा-ख़ैरात करे, इस हाथ से किसी रोने वाले को चुप कराए, किसी के आंसू पोंछे और किसी को रोटी का टुकड़ा दे और इस बात की भी अल्लाह ने उसको ताक़त दी है कि इस हाथ से किसी पर ज़ुल्म करे। देखो, फ़रिश्ता जो है वह सिर्फ़ मजबूर है, उसको अल्लाह ने जितना कह दिया उतना करना पड़ेगा। इसके ख़िलाफ़ करने की फ़रिश्ते में

ताक़त नहीं है। इसी तरीक़े से आसमान है, जमीन है, सूरज हे, चांद है, सितारे हैं, ये जितनी मख़्लूक़ात हैं, इंसान के अलावा ये सारी (मख़्लूक़ात) सिर्फ़ मजबूर हैं, अल्लाह के हुक्म (अम्र) के ताबे हैं। अगर हवा को अल्लाह हुक्म दे कि मामूल के मुताबिक़ चले, तो वह मामूल के मुताबिक़ चलेगी, लोगों के काम बनते रहेंगे और उसी हवा को हुक्म दे दे कि मामूल से ऊपर होकर चले, तो उसी हवा का नाम तूफ़ान बनता है और उसी से जिंदगियां उजड़ जाती हैं।

ऐसे ही पानी अल्लाह के हुक्म के ताबे है, आसमान अल्लाह के हुक्म के ताबे है, ज़मीन भी अल्लाह के हुक्म के ताबे है। जो हुक्म इन चीज़ों को मिलता है, ये चीज़ें वही करती हैं, इसके ख़िलाफ़ करने की ताक़त नहीं रखतीं। सूरज और चांद की जो रविश अल्लाह ने मुक़र्रर कर दी है, उसी रविश के मुताबिक़ वे चलते हैं, उसमें उनके किसी अख़्तियार को दख़ल नहीं है, सिर्फ़ मजबूर हैं।

फ़रिश्तों की इताअत

जिस आसमान पर फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म हुआ, वे फ़रिश्ते सज्दा करते हैं, एक आसमान पर रुकूअ है, एक आसमान पर क़ियाम है, एक आसमान पर क़ादा है, हज़ारों साल से जो हुक्म मिला है, वह कर रहे हैं–

(لَا يَعْصُونَ اللهَ مَا اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ)

'अल्लाह जो कुछ उन्हें हुक्म देता है, उसमें अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।'

सज्दे के लिए कहा, तो सज्दा ही करेगा, रुकूअ नहीं करेगा, फिर उसे अगर रुकूअ का हुक्म हुआ तो रुकूअ ही करेगा, सज्दा नहीं करेगा। जो कहा जाएगा, वही करेगा, लेकिन इंसान, वह ऐसा नहीं है। इंसान के अन्दर अल्लाह ने दोनों ताक़तें रखी हैं, फ़रमांबरदारी की भी ताक़त रखी है और नाफ़रमानी की भी ताक़त रखी है—

(فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ)

'तुममें से कुछ काफ़िर हैं और कुछ ईमान वाले।'

इसमें एक तबक़ा ईमान वाला होगा, एक तबक़ा कुफ़्र वाला होगा। एक तबक़ा फ़ासिक़ होगा और एक तबक़ा मोमिन होगा, एक तबक़ा मानने वाला होगा और एक तबक़ा न मानने वाला होगा और इसी पर सारे हालात रुके हुए हैं, दुनिया के भी और आख़िरत के भी। इस दुनिया पर जो हालात आते हैं, उन हालात के तो लाने वाले हैं अल्लाह, इज़्ज़त और ज़िल्लत, कामियाबी और नाकामी, इत्मीनान और परेशानी, डर और अम्न, बीमारी और तन्दुरुस्ती, मौत और ज़िंदगी, तबियत के मुताबिक़ हालात और तबियत के ख़िलाफ़ हालात, अल्लाह ही के इरादे से दुनिया के अन्दर हालात आते हैं और जैसा अल्लाह इरादा करते हैं, वैसे ही हालात आते हैं। कभी-कभी ज़िल्लत का नक़्शा होता है लेकिन अल्लाह का इरादा हो जाए तो उसमें इज़्ज़त आ जाती है। हज़रत यूसुफ़ अलैहि० का सारा नक़्शा ज़िल्लत का था। दो-दो बार उनका बिकना और ज़िना की तोहमत लगाकर उनका जेलख़ाने में जाना, यह ज़िल्लत का नक़्शा था, लेकिन अल्लाह पाक ने इज़्ज़त का इरादा फ़रमा लिया तो अपनी क़ुदरत से हज़रत यूसुफ़ अलैहि० को ऐसी इज़्ज़त

मिल गई कि दुनिया ही के करोड़ों आदमी हज़ारों साल गुज़रने के बावजूद उनकी इज़्ज़त करते हैं, लेकिन कभी-कभी नक़्शा सारा इज़्ज़त का होता है और उसके अन्दर अल्लाह का इरादा ज़िल्लत का होता है तो उसमें आदमी ज़लील होता है, जैसे क़ारून, सारा नक़्शा उसके पास इज़्ज़त का था, लेकिन अल्लाह ने उसे ऐसा ज़लील किया कि आज दुनिया के करोड़ों इंसानों में से कोई आदमी अपने बेटे का नाम क़ारून रखने को तैयार नहीं है।

दुनिया के हालात और अल्लाह का ज़ाब्ता

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! हालात जो आते हैं इंसानों पर, वे अल्लाह की तरफ़ से आते हैं, लेकिन अल्लाह की तरफ़ से हालात के लाने का एक ज़ाब्ता और एक क़ानून है। अल्लाह जितनी ज़ाब्ते की रियायत करते हैं, उतनी कोई ज़ाब्ते की रियायत नहीं करता और अल्लाह ने ज़ाब्ते बना रखे हैं और ज़ाब्ते की इतनी रियायत है कि फ़रमाया—

"لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ"

यानी मासूम से मासूम शख़्सियतों से अल्लाह कहते हैं कि अगर शिर्क किया तो तुम्हारे सब आमाल ख़त्म हो जाएंगे और नुक़्सान उठाने वालों में तुम हो जाओगे।

आप अंदाज़ा लगाओ कि ज़ाब्ते की अल्लाह के यहां कितनी रियायत है। ये हालात जितने भी आते हैं, दुनिया और आख़िरत के अन्दर, ज़ाब्ते के मातहत आते हैं, बिला ज़ाब्ता बिल्कुल नहीं आते और ज़ाब्ता

अल्लाह का हालात के लाने में दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ें नहीं हैं, बल्कि इंसान के बदन से होने वाले आमाल हैं। बहुत बड़ी ग़लती हर ज़माने में वड़ी भारी अक्सरियत से हुई, आज के ज़माने में भी बहुत बड़ी ग़लती करोड़ों इंसानों से जो हो रही है, वह यह हो रही है कि आम तौर पर इंसान यह समझ रहे हैं कि हमारे हालात का बनना और बिगड़ना टिका हुआ है चीज़ों की कमी और बेशी पर। अगर चीज़ें हमारे हाथ में ज़्यादा होंगी तो हमारे हालात बनेंगे अगर चीज़ें हमारे हाथ में कम होंगी तो हमारे हालात बिगड़ेंगे। यह आम लोगों का ज़ेहन हर ज़माने में रहा है। फ़िरऔन और क़ारून का भी यही ज़ेहन था और जितनी नाफ़रमान क़ौमें गुज़रीं, उन सबका यही ज़ेहन रहा कि मुल्क व माल, सोना-चांदी और दुकान-खेत, ये जितनी चीज़ें हमारे हाथ में ज़्यादा होंगी, उतने हमारे हालात बनेंगे। अल्लाह की ओर से भेजे हुए अंबिया अलैहिमुस्सलाम थे, उन्होंने आकर हर ज़माने में इंसानों का यह ज़ेहन बनाया कि हालात आते हैं अल्लाह की क़ुदरत से, हालात आते हैं अल्लाह के इरादे से, लेकिन अल्लाह ने हालात लाने का जो एक ज़ाब्ता बना रखा है और वह ज़ाब्ता इंसान के बदन से तैयार होने वाले आमाल हैं और इंसान के दिल के अन्दर का यक़ीन है। अगर उसके दिल के अन्दर का यक़ीन ठीक हो जाए और उसके बदन से तैयार होने वाले आमाल दुरुस्त हो जाएं। आंखों का देखना, कानों का सुनना, हाथों का पकड़ना, ज़ुबान का बोलना, पैरों का चलना, दिल व दिमाग़ का सोचना, अगर ठीक हो जाए तो अल्लाह हालात को दुरुस्त लाएंगे। दूसरे लफ़्ज़ों में जो इससे भी आसान है कि अगर दीनदारी होगी तो अल्लाह कामियाब करेंगे और अगर बेदीनी होगी तो अल्लाह

नाकाम करेंगे। अगर दीनदारी कच्चे मकान के पास होगी तो अल्लाह कच्चे मकान वाले को कामियाब करेंगे और बेदीनी पक्के मकान वाले के पास होगी तो अल्लाह पक्के मकान वाले को नाकाम करेंगे, लेकिन एक हैरत की बात जो इंसान को हैरत में डालती है, हर ज़माने में और आज के दौर में भी वह यह कि बहुत से ईमान व आमाल वाले जिन पर भी तक्लीफ़ें आ जाती हैं और बहुत से बेदीन और बग़ैर ईमान वाले और बहुत बेदीन आदमी कभी-कभी देखे जाते हैं कि वे बड़े राहत में होते हैं।

सच्ची कामियाबी और नाकामी किसे कहते हैं?

इसके अलावा एक बात और अपने ज़ेहन में बिठा लो कि असल कामियाबी वह है जो मिलकर ख़त्म न हो और असल नाकामी वह है जो आकर ख़त्म न हो। आम तौर से आदमी देखता है कि बे-दीन आदमी रिश्वत भी लेता है, झूठ बोलता है, ग़ीबत करता है, ख़ियानत करता है, पैसा उसके पास बहुत है, कपड़ा, मकान, सवारियां, खाना उसके पास बहुत है, बहुत मज़े कर रहा है, तो आदमी सोचता है कि बेदीन है, फिर भी कामियाब, लेकिन अल्लाह उसको नाकाम कहते हैं, क्योंकि यह कामियाबी जो दिखाई दे रही है, यह कामियाबी मौत पर ख़त्म हो जाएगी और कभी-कभी मौत से पहले भी ख़त्म हो जाती है और मौत के बाद फिर जो नाकामी शुरू होगी, तो वह नाकामी बड़ी लम्बी नाकामी होगी। अगर आदमी कुफ़्र या शिर्क की हालत में मरा, तो फिर वह नाकामी ऐसी होगी जो कभी ख़त्म नहीं होगी, जिसे अल्लाह खुला घाटा कहते हैं और अगर वह आदमी ईमान की

हालत में मरा, तो चाहे उसने दुनिया में कितनी तक्लीफ़ें उठाई हों और लोग उसे नाकाम कह रहे हों, लेकिन अल्लाह उसे कामियाब बताएंगे, क्योंकि कभी-कभी तो उसे मरने से पहले ऐसी कामियाबी मिल जाती है कि जिसे दुनिया के इंसान भी कहते हैं कि वाक़ई कामियाबी मिली और कभी-कभी दुनिया से पहले तो नहीं देख पाते, लेकिन मरने के बाद फिर जो कामियाबी शुरू होती है तो वह ऐसी कामियाबी होती है, जो कभी ख़त्म नहीं होती, मौत पर हालात ख़त्म नहीं होते, बल्कि मौत पर हालात बढ़ जाते हैं। अगर मरने के बाद अच्छा हाल आया तो वह अच्छा हाल बढ़ जाएगा और मरने के बाद बुरा हाल आया तो वह बुरा हाल भी बढ़ जाएगा, जैसे दुनिया के हालात थे, वैसे नहीं रहेंगे।

जन्नत की नेमतें

दुनिया के अन्दर जिसका हाल अच्छा था मरने के बाद अगर अल्लाह ने उसे अच्छा हाल दिया तो वह दुनिया जैसा अच्छा हाल नहीं होगा, बल्कि बढ़ा हुआ होगा, छोटी से छोटी, मामूली से मामूली दर्जे की जन्नत अगर अल्लाह ने किसी को दे दी जो ईमान के ज़र्रे पर मिलेगी, तो वह इतनी बड़ी होगी जो पूरी दुनिया से बड़ी होगी और सत्तर-बहत्तर बीवियां उसको मिलेंगी और दस हज़ार उसमें ख़िदमतगुज़ार होंगे और दूध की नहरें शहद की नहरें और पाकीज़ा शराब की नहरें उसमें चलती होंगी और सोने-चांदी के बने हुए मकान होंगे। उनके जोड़ने का गारा मुश्क का होगा और जन्नत की ज़मीन की मिट्टी ज़ाफ़रान की होगी और पत्थर और कंकड़ हीरे-जवाहरात के होंगे और

जो नेमत वहां पर मिलेगी, कभी छिनेगी नहीं और जन्नत में जाने वाला हर आदमी जवान होगा और उसकी जवानी कभी ख़त्म नहीं होगी। मर्द भी, औरतें भी 30-35 साल के होकर जन्नत में जाएंगे, चाहे मरते वक़्त उनकी उम्र नव्वे साल की हुई हो और पचास करोड़ साल के बाद अगर जन्नती को देखा जाएगा, तो वैसा ही जवान 30, 35 साल का होगा, जवानी ख़त्म नहीं होगी और ज़िंदगी जो मिली, कभी ख़त्म नहीं होगी और मौत का वहां पर डर नहीं, मकानों के बोसीदा होने का डर नहीं, नहरों के सूख जाने का ख़तरा नहीं, मर्द एक जगह तकिया लगाए बैठे होंगे मसेहरी पर, उस मर्द की बीवी, दूसरी तरफ़ तकिया लगाकर बैठी होगी मसेहरी पर और सारा एक अजीब व ग़रीब मंज़र होगा–

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

'न तो आगे का कोई डर और न पीछे का कोई ग़म', न तो जवानी के ख़त्म होने का ग़म और न ही ज़िन्दगी के ख़त्म होने का ग़म, किसी क़िस्म का कोई ग़म भी नहीं, तेज़ रफ़्तार और ऊंची क़िस्म की सवारियां, अगर दूसरी जन्नतों में जाना हो, तो वहां पर भी जाने की इजाज़त मिलेगी।

जन्नत की नेमतों में सबसे ऊंची नेमत

हफ़्ते में एक बार कम से कम अल्लाह की ज़ियारत और दीदार, यह इतनी बड़ी नेमत होगी कि सारी नेमतें उसके सामने फीकी पड़ जाएंगी। अल्लाह को इस दुनिया में अगर किसी ने न पहचाना और

अल्लाह की मारफ़त अगर किसी को न मिली तो ज़िंदगी बेकार हो गई। अल्लाह की मारफ़त जिसको मिल जाती है और ईमान वाला आदमी बन जाता है, तो फिर अल्लाह की ज़ियारत वहां पर होती है और वह सारी जन्नत की नेमतों में ऊंची क़िस्म की नेमत होती है और अल्लाह उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं, दिल रखते हैं और यह फ़रमाते हैं, तुझे कुछ और चाहिए तो वह यह कहता है, ऐ अल्लाह! हर क़िस्म की नेमतें तूने हमें दे दीं, अब हम तुमसे और क्या मांगें।

अल्लाह फ़रमाएंगे कि एक नेमत मैं तुम्हें और देता हूं, वह यह कि मैं तुमसे राज़ी हो गया, मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूंगा, क्योंकि अल्लाह का नाराज़ होना बहुत बड़ी मुसीबत और अल्लाह का राज़ी होना बड़ी नेमत है। सूरः फ़ातिहा ही में दो दुआएं मांगी जाती हैं कि اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ 'अन-अम-त अलैहिम' वाले रास्ते पर हमें चलाना, غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम' वाले रास्ते पर हमें मत चलाना। اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ अन-अम-त अलैहिम वाला रास्ता वह है जो अल्लाह की रज़ामंदी पर पूरा होता है और مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ मग़ज़ूबि अलैहिम वाला रास्ता वह है जो अल्लाह के ग़ज़ब और अल्लाह की नाराज़गी पर पूरा होता है।

जहन्नम के अज़ाब

तो मैंने अर्ज़ किया कि वहां पर हालात दुनिया की तरह नहीं होंगे। दुनिया के अन्दर अगर किसी को सज़ा होती है तो वह पांच छः फ़िट के बदन को होती है, लेकिन अगर जहन्नम के अन्दर सज़ा होगी, तो

वह इतना बड़ा बदन बना दिया जाएगा कि एक दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर और खाल इतनी मोटी और लम्बी होगी कि तीन रात तक अगर चलो तो तब जाकर उसकी खाल पूरी हो। इतना बड़ा बदन बनाकर सांप ऊंट के बराबर और बिच्छू ख़च्चर के बराबर, एक बार काटें तो चालीस साल तक तक्लीफ़ बाक़ी रहे। (अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाए) और आदमी परेशान, चारों तरफ़ से फ़रिश्तों का हथौड़ों से मारना, आग का जलाना, अंधेरे का सताना। इस आग के अन्दर अंधेरा, सांप और बिच्छुओं का काटना भूख और प्यास का सताना और आदमी परेशान भागना चाहेगा तो दरवाज़े बन्द मिलेंगे। बड़े-बड़े फ़रिश्तों के पहरे मिलेंगे और फ़रिश्तों से कहेगा कि तुम हमारी मदद करो तो फ़रिश्ते अलग-अलग लाइनों के जवाब देंगे, फ़रिश्ते कहेंगे—

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ الآيه

'क्या तुम्हारे पास कोई समझाने वाला नहीं आया था? चौंकाने वाला, बताने वाला दुनिया के अन्दर नहीं आया था?

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ...... أَصْحَابِ السَّعِيرِ ٥

वे कहेंगे कि 'बेशक हमको समझाने वाले आए थे, तो हमने उनको झूठा समझा, हम यह समझे कि जन्नत और दोज़ख़ यह ख़्याली चीज़ है, कुछ भी नहीं, दिल बहलाने की या धमकाने की एक चीज़ है। हमको यह नहीं मालूम था कि यह वाक़िया होगा, काश कि उस दिन हम यह मान लेते या सुन लेते या समझ लेते तो आज के दिन हम जहन्नम के अन्दर न होते।'

अपने गुनाहों को वे मान लेंगे और इक़रार करेंगे, लेकिन यह मान लेना और इक़रार करना वहां उनके काम नहीं आएगा।

जहन्नम के दारोग़ा से फ़रियाद

बहुत बड़ा एक दारोग़ा और फ़रिश्ता होगा। उससे वे यह कहेंगे कि तू अपने परवरदिगार से यह दुआ कर—

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ اِنَّكُمْ مَاكِثُوْنَ۝

उस दारोग़ा का नाम मालिक होगा, वे उससे कहेंगे कि ऐ मालिक! तू अपने परवरदिगार से कह दे कि हमको बिल्कुल ख़त्म कर दे। वह कहेगा कि ऐसा नहीं होगा, अब तो तुमको यहीं पर रहना होगा, अलग-अलग जवाब देंगे।

दोज़ख़ियों की शैतान से इल्तिजा

शैतान से कहेंगे कि तेरी बात हमने मानी और हम यहां पर आए तो तू हमारा साथ दे। वह कहेगा—

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْا اَنْفُسَكُمْ مَا اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ

'न तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं और न तुम मेरी मदद कर सकते हो। मैंने तुमको ग़लत बात कही, तो तुमने क्यों मानी? अल्लाह तुमसे सही कह रहा था, उसकी क्यों नहीं मानी? यह शैतान का उनसे जवाब होगा।

Maktab Ashraf

दुन्यवी लीडरों से फ़रियाद

चारों तरफ़ से मायूस होकर फिर देखेंगे कि बड़े-बड़े चौधरी, बड़े-बड़े ज़िम्मेदार, दुनिया के अन्दर जब कोई बात पेश आती थी तो उनके पास जाते थे और उनसे कहते थे कि हम परेशानी में हैं, हमारी परेशानी दूर करो, तो वे बड़े-बड़े लीडर और देवता और बड़े-बड़े चौधरी और सरदारों के पास जाएंगे और कहेंगे कि हम इस परेशानी में हैं, चारों तरफ़ से हमें सांप काटते हैं, फ़रिश्ते मारते हैं, आग जलाती है, भाग नहीं सकते। फ़रिश्ते ज़रा भी हम पर रहम नहीं करते। शैतान हमारा साथ नहीं देता, तुम हमारे बड़े हो, तुम हमारे लिए कोई रास्ता सोचो, तो वे लोग कहेंगे—

اِسۡتَبۡرَءَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اتُّبِعُوۡا

'हम लोग तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं कर सकते, हम ज़िम्मेदारी से बरी हैं।'

खरे-खोटे की पहचान

अब ये छोटे लोग कहेंगे कि अब के अगर अल्लाह ने हमें दुनिया में भेजा तो अब हम तुमहारी पार्टी में नहीं होंगे, इसलिए कि तुमने हमको ग़लत रास्ता बताया और फिर वे बद-दुआ करेंगे!

सरदारों पर बद-दुआ

ऐ अल्लाह! हमने अपने सरदारों की मानी और हमने अपने चौधरियों की मानी, लेकिन उन्होंने हमको तेरे रास्ते से हटा दिया। ऐ

अल्लाह! तू उनके ऊपर दोगुना अज़ाब डाल दे और ऐ अल्लाह! तू उनके ऊपर अपनी लानत को बरसा। मेरे मोहतरम दोस्तो! एक बहुत बड़ा मंज़र कल क़ियामत का आने वाला है और उसमें खरे-खोटे का फ़ैसला होगा। यह ख़बर अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने अल्लाह के पास से लाकर हमें दी। इसकी तैयारी करने का ज़माना इस दुनिया का ज़माना है, मरने के बाद फिर कोई तैयारी नहीं कर सकता।

मौत की हक़ीक़त

जब क़ब्र में आदमी चला जाता है, तो फिर हालात बढ़ गए, चाहे अच्छे हों या बुरे, लेकिन इंतिज़ाम की ताक़त ख़त्म हो गई। मौत का मतलब क्या है? 'इंसान के अन्दर इंतिज़ाम की ताक़त का ख़त्म हो जाना।' दुनिया के अन्दर अगर ख़ुदा न करे सांप आ जाए तो आदमी डंडे से मारेगा या कम से कम भाग जाएगा। आग लग जाए तो पानी से बुझाएगा, अगर रोशनी बन्द हो जाए, तो आदमी टार्च वग़ैरह जलाएगा और भूख लग जाए तो खाना वग़ैरह जाकर खाएगा और अगर प्यास लगे तो डोल-रस्सी से खींच कर पानी पी लेगा। यहां आदमी पर अगर कोई हाल आवे तो उसके इंतिज़ाम की क़ूवत मौजूद है और मौत का यह मतलब है कि आदमी के अन्दर से इंतिज़ाम की ताक़त ख़त्म। क़ब्र के अन्दर सांप तो आया, हटाने की ताक़त ख़त्म, अंधेरा आया, उजाला लाने की ताक़त ख़त्म, पिटाई हो रही है, उससे बचने की ताक़त ख़त्म। अगर पांच दस डंडे रख भी दें रिश्तेदार, तो दुनिया के डंडों से क़ब्र के सांप नहीं मरते और दुनिया के पानी से क़ब्र की आग नहीं बुझती। दुनिया के टार्च से क़ब्र का अंधेरा दूर नहीं

होता और दुनिया की चीज़ों से क़ब्र के अन्दर आसानी नहीं मिलती।

दुनिया की ज़िंदगी की क़द्र व क़ीमत

वहां जब आदमी देखेगा कि कोई रास्ता नहीं, तो फिर वह अल्लाह से कहेगा, ऐ मेरे अल्लाह! मुझे तू वापस लौटा दे। इतना तो वह भी जानेगा कि क़ब्र में कुछ नहीं कर सकता, यहां पर तो मैं नमाज़ नहीं पढ़ सकता, यहां पर मैं रोज़ा नहीं रख सकता, तस्बीह व तिलावत नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! तू मुझे वापस भेज दे। कितनी बड़ी दौलत यह दुनिया की ज़िंदगी थी, जो मेरे हाथ से निकल गई। अब मुझे मालूम हुआ कि दुनिया में अगर एक बार 'सुबूहानल्लाह' कहता तो मुझे इसका बदला मिलता। दुनिया में अगर दावत का काम करता तो जितने इंसानों में दावत का पैग़ाम पहुंचाता और जितने इंसानों में दीनदारी आती। इन सबके बराबर, ऐ अल्लाह! अज्र व सवाब मिलता। अब तू मुझे दुनिया में वापस भेज दे, अब मेरी समझ में बात आ गई। अब मैं दुनिया में जाकर अच्छे-अच्छे काम करूंगा। अल्लाह फ़रमाएंगे, "كَلَّا" 'कल्ला' (बिल्कुल नहीं)

तक्लीफ़ों की हिक्मत

और देखो, एक बात मैं बता दूं, दुनिया के अन्दर इंसान पर ग़म व तक्लीफ़ इसलिए आती है, ताकि इंसान उलटा रास्ता छोड़ दे और सीधे रास्ते पर आ जाए। दुनिया के अंदर ये तक्लीफ़ें अल्लाह की ओर से रहमत हैं। दुनिया के अन्दर जब कोई ग़लत रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तंबीह के तौर पर तक्लीफ़ें डालते हैं और इन तक्लीफ़ों का मंशा और उनमें मस्लहत अल्लाह की यह होती है कि

"لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ" 'लअल्लहुम यर्जिऊन' बार-बार अल्लाह फ़रमाते हैं कि ये छोटी तक्लीफ़ें मैं डालता हूं ताकि तुम पलटा खा जाओ, यानी ज़लालत छोड़ दो और सही रास्ते पर आ जाओ।

इस उम्मत की ज़िम्मेदारी

देखो, मेरे मोहतरम दोस्तो! ये बातें जो मैं आपको बतला रहा हूं, ये बातें बतलाना काम था नबियों का। ये बातें मूसा अलैहिस्सलाम के बताने की थीं और हज़रत ईसा व हज़रत नूह अलैहिमस्सलाम, अंबिया अलैहिमुस्सलाम दावत दिया करते थे। लोगों के दिलों में अल्लाह की अज़्मत और बड़ाई पैदा किया करते थे, मरने के बाद वाली ज़िंदगी उन्हें बतलाते थे और छिपी हुई बातें अल्लाह उन पर खोलता था, वे उन्हें बताया करते थे और अल्लाह की बड़ाई को इतने ज़ोरों पर बयान फ़रमाते थे, ताकि उनका ज़ेहन बने। यह काम था नबियों का, लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने नुबूवत को ख़त्म करके अब यह सारा काम उम्मत पर डाल दिया तो उम्मती होने की हैसियत से इन बातों को आप लोगों के सामने बयान करता हूं और आप लोग उम्मती होने की हैसियत से इस दावत को लेकर पूरी दुनिया में फैल जाइए, क्योंकि लोग अगर बग़ैर ईमान के मर जाएंगे तो मरने के बाद उनके पास कोई रास्ता नहीं। मरने से पहले अगर उनका ज़ेहन बनाया जाए तो उनका ज़ेहन बन सकता है और अगर उनका ज़ेहन बना, वे ईमान व अमल की तरफ़ आ गए, तो मैं सच कहता हूं, वे ऐसी क़द्र करेंगे और जितने आदमी दीनदारी पर आते चले जाएंगे, उन सबके बराबर आपको सवाब मिलेगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत का बड़ा मैदान

दूसरे नबियों अलैहिमस्सलाम को वक़्त मिला दुनिया में काम का ज़्यादा, लेकिन काम मिला थोड़ा। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को काम कितना मिला? सिर्फ़ अपनी क़ौम के अन्दर दीन का काम करना था,

"اِنَّا اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ"

'हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा' (क़ुरआन), लेकिन दावत की लाइन की उम्र कितनी मिली? साढ़े नौ साल, तो हर नबी को काम मिला थोड़ा और वक़्त मिला ज़्यादा, लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह ने काम दिया ज़्यादा, पूरे दीन को ज़िंदा करना, लेकिन वक़्त कितना मिला? 40 साल की उम्र में आपको नुबूवत मिली और 63 साल की उम्र में आप इस दुनिया से रुख़्सत हो गए, तो वक़्त मिला आपको 23 साल का। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ नमाज़ को या सिर्फ़ रोज़ा को ज़िंदा करने के लिए तश्रीफ़ लाए हों, ऐसी कोई बात नहीं, बल्कि हर-हर शोबे में दीन ज़िंदा हो जाए। अगर अल्लाह ने छोटी-सी दुकान दी है, तो इस छोटी-सी दुकान के अन्दर दीन ज़िंदा कर दो और अगर अल्लाह ने एक छोटा-सा घर, बीवी, दो बच्चे दिए हैं तो उनमें दीन ज़िंदा कर दो।

क्या दीनी मेहनत मुल्क व माल पर मौक़ूफ़ है?

इसका इन्तिज़ार नहीं करना चाहिए, जब हमारे हाथ में मुल्क और माल आएगा, तो फिर दीन ज़िंदा करेंगे। जब तू अपनी दुकान

और अपने घर में दीन को ज़िंदा नहीं कर पाता, तो पूरे मुल्क में क्या उम्मीद रखेंगे कि तू दीन को ज़िंदा करेगा। भाई! तेरे बस में जितना है, उतना दीन तू ज़िंदा कर ले।

दीन की मेहनत अपना असर कब दिखाती है?

फिर दूसरी बात यह है कि अल्लाह ने हमें दीन की दावत का जितना काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़त्मे नुबूवत के सदक़े में मरहमत फ़रमाया, दुनिया में कहीं जाकर यह काम किया, जब तक लोगों की समझ में नहीं आया, उस वक़्त तक तो लोगों ने मुख़ालफ़त की, लेकिन जब उनके ज़ेहन में यह बात आ गई कि ये लोग हमसे कुछ नहीं चाहते, बल्कि ईमान का ज़िंदा करना, अख़्लाक़ का ज़िंदा करना, इंसान में इंसानियत का लाना ये चाहते हैं और अमलन् लोगों को तजुर्बा भी हो गया कि जो लोग अल्लाह के दीन की मेहनत में लगे तो उन्होंने रिश्वतें छोड़ दीं, उन्होंने धोखा देना छोड़ दिया और बेटों ने बाप की फ़रमांबरदारियां शुरू कर दीं और शौहरों ने बीवियों के हक़ अदा करने शुरू कर दिए और उनके दिलों में आख़िरत का फ़िक्र आया। फिर जितने मुख़ालफ़त करने वाले थे उनके दिलों में भी उनकी मुहब्बत पैदा हुई और अल्लाह ने काम आसान कर दिया। ऐसी जगहों में जहां दहरियत की फ़िज़ा है, अल्लाह ने वहां पर हिदायत के अलमबरदारों को अपनी क़ुदरत से खड़ा कर दिया। दीन का फैलाना काम ख़ुदा का है और इंसानी दिलों में हिदायत का उतारना यह काम अल्लाह का है, लेकिन यह दुनिया चूंकि दारुल अस्बाब है और हर चीज़ का सबब अख़्तियार करने के

बाद अल्लाह तआला उस चीज़ को वजूद में लाते हैं, मर्द व औरत मिलते हैं तो औलाद पैदा होती है। औलाद को पैदा करने का काम ख़ुदा का है, लेकिन सबब के दर्जे में "اَفَرَاَيْتُمْ مَا تُمْنُوْنَ" 'अ-फ़-रऐतुम मा तुमनून', मर्द व औरत का मिलना ज़रूरी होगा। यों अल्लाह की क़ुदरत है कि मर्द व औरत के मिले बग़ैर भी इंसान बना दे जैसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बग़ैर मां और बाप के बनाया और हज़रत हव्वा को बग़ैर मां के बनाया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के बनाया।

क़ुदरत तो अल्लाह की हर चीज़ पर है, लेकिन तर्तीब अल्लाह की हर चीज़ के लिए यह है कि इंसान अस्बाब अख़्तियार करे। इसके बाद इरादा अगर अल्लाह का हो जावे तो इसका नतीजा ज़रूर निकलेगा। इसी तरह पूरे आलम के बसने वालों के दिल तो हैं अल्लाह के क़ब्ज़े में और अल्लाह के एक इशारे और एक इरादे पर सबके दिलों में हिदायत आ सकती है, लेकिन चूंकि अल्लाह ने दुनिया को दारुल अस्बाब बनाया है, इसी बुनियाद पर जैसे नबियों ने जान व माल की क़ुरबानी के साथ दावत की इस लाइन पर मेहनत की, ऐसी दावत की मेहनत जब यह उम्मत करेगी, तो फिर अल्लाह इंसानी दिलों को अपनी ओर पलट देंगे, इसका तजुर्बा सहाबा किराम के दौर में और आज के दौर में भी हुआ, जहां पर सही उसूलों के साथ जानी और माली क़ुरबानियों के साथ नक़ल व हरकत हुई तो वहां के रहने वाले इंसानों के दिलों को अल्लाह ने पलट दिया और एक उमूमी फ़िज़ा दीन की बनी, माहौल दीन का बना।

दुश्मनी और हठधर्मी महरूमी की वजह

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! जब आदमी दुश्मनी की वजह से हठधर्मी पर आ जाए तो कितना ही दीनी माहौल बने, उसे हिदायत नहीं कहते जैसे फ़िरऔन समझ तो सारी बात गया, लेकिन उसे हिदायत नहीं मिली, जादूगरों को मिल गई जो उसकी हिमायत में आए थे। यह मतलब नहीं कि फ़िरऔन समझा नहीं था, लेकिन उसके अन्दर ज़िद्दीपना था—

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا (الآية)

तो फिर चारों तरफ़ दावत की वजह से माहौल ईमान का बनेगा तो फिर अच्छी फ़ितरत वाले जो इंसान होंगे, जिनके दिलों में हठधर्मी, दुश्मनी और ज़िद्दीपना नहीं होगा, अल्लाह उनके दिलों को ईमान की तरफ़ पलट देंगे अलबत्ता ज़िद्दीपने वाला और दुश्मनी और अस्बियत वाला आदमी महरूम रहता है, जब तक वह दुश्मनी पर रहे।

अबू जह्ल भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी बात समझ चुका था। जब अबू सुफ़ियान ने तंहाई में जाकर उससे पूछा तो उसने साफ़ कह दिया कि हमारे ख़ानदान में और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ानदान में वर्षों से मुक़ाबला चल रहा है, उन्होंने हाजियों को पानी पिलाना शुरू किया तो हमारे ख़ानदान ने भी हाजियों को पानी पिलाना शुरू कर दिया, आगे नहीं बढ़ने दिया। उन्होंने हाजियों को खाना खिलाना शुरू किया, तो हमारे ख़ानदान ने भी खाना खिलाना शुरू कर दिया, आगे

नहीं बढ़ने दिया, लेकिन अब हमारे दर्मियान एक बात ऐसी आ गई कि उनके ख़ानदान में एक आदमी ने नुबूवत का दावा किया और वह हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं और दावा करके उसकी दलील भी ले आए। अब यहां पर हम बेकस व बेबस हैं। हम किसी आदमी को नुबूवत का दावा करवा नहीं सकते।

क़ुरआन का हमेशा का चैलेंज

चुनांचे जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुबूवत का दावा किया, तो उन्होंने दलील मांगी कि आप जो यह कलाम अल्लाह का हमारे पास लाते हैं, यह अल्लाह का कलाम नहीं, बल्कि यह तुम अपनी तरफ़ से गढ़ कर लाए हो, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बहुत आसान तर्कीब मैं बताता हूं, अपनी नुबूवत को फ़ेल करने की, वह यह कि जैसा कलाम मैं बता रहा हूं बेपढ़ा था, तुम सारे पढ़े-लिखे मिलकर ऐसा कलाम बनाओ। नहीं कर सकते, तो फ़रमाया, चलो एक आयत ही बना लो—

"فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖ اِنْ كَانُوْا صَادِقِيْنَ"

बद्र के अन्दर उत्बा और शैबा और वलीद, ये सारे के सारे गला कटवाने को तैयार हैं, लेकिन क़ुरआन पाक जैसी एक सूरः बनाने को तैयार नहीं। यह अगर इनके बस में होती, तो गला कटवाने से आसान, कोई सूरः बनाकर ले आते और यह कह दिया कि न तो तुम बना सकते हो और न क़ियामत तक अगर सारे मिल-जुल भी जाएं तो नहीं बना सकते।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब नबी अल्लाह की तरफ़ से कोई बात कहता है और वह बात आम नज़रों को दिखाई नहीं देती और आम आदमियों से वह मनवानी होती है, तो नबी को सबसे पहले अपनी नुबूवत की दलील पेश करनी होती है, इसलिए कि हर नबी बात करेगा जन्नत की, जहन्नम की, क़ब्र की, अज़ाब की और ये सारी चीज़ें ऐसी हैं जो इंसान को आंखों से दिखाई नहीं देतीं और जो चीज़ आंखों से दिखाई नहीं देती, वह चीज़ बताने वाला सच्चा और सादिक़ हो तो मानी जाएगी, वरना नहीं मानी जाएगी, इसलिए अल्लाह जल्ल जलालुहू ने जिसे अपना नबी बनाकर भेजा, उसके साथ मोजज़ा भी दिया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मोजज़ा

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ऐसा आसान-सा मोजज़ा दिया कि जादूगर जो बिल्कुल फ़िरऔन की हिमायत में आए थे, उन्होंने जब डंडे को सांप बनते देखा तो वे सारे समझ गए कि यह जादू नहीं है, बल्कि हक़ीक़त है और उन जादूगरों ने समझ लिया कि मूसा अलैहिस्सलाम जब अल्लाह के नबी हैं तो नबी की बात का न मानना अपने आपको तबाह व बर्बाद करना है। फ़ौरन सारे के सारे सज्दे में पड़ गए और ईमान ले आए। उन्हें यह बात मालूम थी कि हम अगर ईमान ले आए, तो फ़िरऔन ने जिन इनामों के देने का एलान कर रखा है, उनसे हम महरूम रहेंगे, बल्कि फ़िरऔन बड़ी सख़्त क़िस्म की सज़ाएं देता है तो सख़्त क़िस्म की सज़ाओं में हमें जाना होगा, लेकिन ईमान वाले बने और फ़िरऔन से कह

दिया कि तेरा अगर बस चलता है तो हमारी मौत तक चलता है। हम मर जाएंगे तो इसके बाद तू कुछ नहीं कर सकता, "آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ" आमन्ना बिरब्बिल आलमीन 'हम ईमान ले आए रब्बुल आलमीन पर।'

जब ये जादूगर जो फ़िरऔन की हिमायत में आए थे, ईमान लाए तो तारीख़ी रिवायतों से यह बात मिलती है (हदीस नहीं है) कि लाखों का मज्मा जो वहां पर देखने वालों में था, वह लाखों का मज़्मा ईमान वाला बन गया और फ़िरऔन की बेगम जो वहां पर महल सरा में थी, वह ईमान वाली बनी और फ़िरऔन के दरबार का एक दरबारी, वह भी ईमान वाला बना, उसने अपने ईमान को छिपा रखा था और मैं बताऊं इससे भी आगे कि फ़िरऔन के अपने अन्दर का भी यक़ीन बना कि यह बात बोगस नहीं है, बल्कि हक़ीक़त है, लेकिन इस बात को अगर मैं मानूं तो मेरी मूंछ नीची हो जाएगी, मेरी नाक कट जाएगी, बस उसकी सरकशी ने उसे बात मानने से रोका, वरना समझ में उसके भी आ गया था और इसी को क़ुरआन कहता है—

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا (الآيہ)

फ़िरऔन का दुश्मनी की वजह से इंकार

फ़िरऔन का इंकार जो था, वह सरकशी की वजह से था अपनी बुलन्दी और बड़ाई की वजह से था और अबू जह्ल का जो इंकार था, वह सिर्फ़ मूंछ की वजह से था और यह कि नाक ऊंची रहे। इस वजह से नहीं था कि बात समझ में नहीं आई, बल्कि हुज़ूर

Maktaba Ashraf

अलैहिस्सलाम ने ऐसी बात कह दी कि आज तक की रहती दुनिया उसका मुक़ाबला करने से आजिज़ है। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरी दुनिया के लिए नबी बनाकर भेजे गए तो अल्लाह ने आपको ऐसा मोजज़ा दिया कि क़ियामत तक इस उम्मत के हाथ में अपने नबी का मोजज़ा होगा और वह मोजज़ा क़ुरआन पाक है। तौरात, ज़बूर और इंजील जिन ज़ुबानों में लिखी गईं उन ज़ुबानों का जानने वाला हमें आज तक एक नहीं मिला। हम इंकार नहीं कर रहे हैं कि नहीं होंगे, लेकिन हमें इनमें से किसी की ज़ुबान जानने वाला आज तक नहीं मिला, लेकिन क़ुरआन जिस ज़ुबान में उतरा उसके जानने वाले ख़ुदा के दुश्मन भी लाखों की तायदाद में दुनिया के अन्दर मौजूद हैं, लेकिन ये सारे के सारे मिलकर क़ुरआन जैसी एक सूरः नहीं बना सकते। हुज़ूर सल्ल० मदीने में यहूदियों के मदरसे में तशरीफ़ ले गए और जाकर यह पूछा कि बताओ, तौरात के अन्दर यह मौजूद है कि आख़िरी नबी आने वाला है। उन्होंने कहा कि हां, आपने फ़रमाया, क्या इस आख़िरी नबी के बारे में ये निशानियां लिखी हैं? उन्होंने कहा, हां, लिखी हैं। आपने फ़रमाया, वह नबी मैं हूं, लाओ तौरात और उसके अन्दर लिखी हुई निशानियां मेरे अन्दर देख लो।

यहूदियों का दुश्मनी की वजह से इंकार

यहूदी समझ गए और बात उनकी समझ में आ गई, लेकिन दुश्मनी और ज़िद्दीपन में उन्होंने कहा कि सारे नबी आए बनी इसराईल में, तो नबियों का सरदार बनी इस्माईल में कैसे आ गया, क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो साहबज़ादे थे। हज़रत

इस्माईल और हज़रत इस्हाक़। हज़रत इस्हाक़ के साहबज़ादे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम थे, जिनका दूसरा नाम इस्राईल था, तो दो सिलसिले चले, एक बनी इस्राईल का, दूसरा बनी इस्माईल का। बनी इस्माईल में तो कोई नबी नहीं आया, सिवाए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और बनी इस्राईल में हज़ारों की तादाद में अंबिया अलैहिमुस्सलाम आए, तो यहूदियों में यह दुश्मनी थी कि अगर यह नबी भी बनी इस्राईल में आते तो हम मानते। चूंकि बनी इस्माईल में हैं, इसलिए नहीं मानते। यह बात याद रखना कि दावत की फ़िज़ा जब ईमान के ज़रिए दुनिया में बनती है, तो जो भली फ़ितरत के लोग होते हैं, जिनमें दुश्मनी, ज़िद्दीपना और हठधर्मी नहीं होती, अल्लाह पाक उन्हें हिदायत से महरूम नहीं फ़रमाते। हिदायत से महरूम वही आदमी रहता है, जिसमें ज़िद्दीपन हो, जिसने उसके दिल की इस्तेदाद को ख़त्म कर दिया हो।

लेकिन एक वक़्त ऐसा आया कि जितने मुख़ालफ़त करने वाले थे, उनमें बहुत से ईमान वाले बन गए और ऐसे ईमान वाले बने कि उन्होंने ईमान को दुनिया में फैलाने के लिए अपनी जान-माल को क़ुर्बान कर दिया और अल्लाह के रास्ते में अपने आपको शहीद बना लिया। इस वजह से हम दुनिया के किसी आदमी के हिदायत पर आने से नाउम्मीद न हों। हमें पूरी दुनिया को अपना मैदान बनाना चाहिए।

उम्मते मुस्लिमा की ज़िम्मेदारी

मेरे दोस्तो! यह दावत का काम था अंबिया अलैहिमुस्सलाम का, लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने पर नबियों

का आना तो बन्द हो गया, वह नबियों वाला, सआदतमंदी वाला काम, ख़ुशनसीबी वाला काम उम्मत को मिला। नबियों के इस काम से जैसे अल्लाह की रहमत बरसती थी, जब यह उम्मत इस काम को करेगी तो वैसे ही अल्लाह की रहमत बरसेगी और सारी दुनिया के इंसानों से बेदीनी ख़त्म होकर दीनदारी आएगी और जब दीनदारी आएगी, तो ये फ़िज़ाएं जो परेशानियों की बनी हुई हैं, तुम अपनी आंखों से देखोगे कि अल्लाह उस तरीक़े से ये इंफ़िरादी और इज्तिमाई परेशानियां दूर कर देंगे, जैसे नाक बन्द हो एक आदमी और वह चूना रोशनदर रगड़ कर नाक के पास ले आए तो जिस तरह उसका नाक और दिमाग़ खुलता चला जाता है, उस तरीक़े से अल्लाह दुनिया की परेशानियों को दूर कर देंगे और आगे मरने के बाद वाली परेशानियां, जो इससे भी ज़्यादा ख़तरनाक क़िस्म की परेशानियां हैं, जिसकी तरफ़ आदमी का ध्यान भी नहीं जाता, क्योंकि मरने के बाद वाली ज़िंदगी को आदमी सरसरी समझता है और सरसरी इसलिए समझता है कि आंखों से दिखाई नहीं देता, बहुत से आदमी तो बेचारे उसी के अन्दर डूब रहे हैं।

एक दहरिए से हज़रत की बातचीत

हम एक सफ़र में हवाई जहाज़ में थे। एक दहरिया हमारे पास बैठा हुआ था। उससे हमने थोड़ी-सी बात की, वह ज़रा मानूस हुआ (शिर्क और वेद वग़ैरह को भी नहीं मानता था) उसका रुख़ दहरियत की तरफ़ था। उसने कहा, मौलवी साहब! मैं तुमसे एक बात पूछता हूं, उसने कहा, दुनिया के करोड़ों

आदमी अल्लाह को मानते हैं, मुसलमान भी, हिन्दू भी, यहूदी और ईसाई भी और मुझे हैरत होती है कि उनमें से किसी ने अल्लाह को देखा तो नहीं है, फिर यह अल्लाह को, जो दिखाई नहीं देता, कैसे मानते हैं? उसने कहा, मौलवी साहब! माफ़ करना, मैंने बहुत से जोगियों से पूछा, लेकिन वह मुझे इत्मीनान नहीं दिला सके, क्योंकि मेरे मां-बाप भी इसी लाइन के थे। चूंकि आपकी बातों से मुझे अन्दाज़ा हो रहा है कि शायद तुम मुझे समझा सको कि जो अल्लाह नहीं दिखाई दे रहा है, उसे कैसे मानें? मैंने कहा, देखो (वह डाक्टर थे और टोकियो से कोई डिग्री लेकर आ रहे थे और अपने वतन जा रहे थे) दुनिया के करोड़ों आदमी करोड़ों चीज़ों को मानते हैं, बग़ैर देखे और उन मुल्कों में भी, जहां दहरियत फैली हुई है, वहां पर भी करोड़ों इंसान करोड़ों चीज़ों को बग़ैर देखे मान लेते हैं।

उसने कहा, मौलवी साहब! करोड़ों को तो छोड़ो, हमें ऐसे दो-चार आदमी ही बतला दो। मैंने कहा, डाक्टर साहब! एक शर्त है कि बग़ैर देखे जो चीज़ मानी जाती है, वह किसी अलामत और निशानी से मानी जाती है, या तो चीज़ को आदमी देखकर मानता है और बग़ैर देखे उस वक़्त मानता है, जब उसकी निशानी और अलामत मौजूद हो। वह ज़रा सोच में पड़ा। मैंने कहा घबराओ नहीं, मैं तुम्हें बताता हूं।

बग़ैर देखे मानी जाने वाली चीज़ें

मैंने कहा कि तुम्हारी अक़्ल और मेरी अक़्ल और जहाज़ में जितने आदमी बैठे हैं, किसी की अक़्ल दिखाई नहीं देती और बताओ

ज़िंदगी में तुमने कोई ऐसा आदमी देखा हो जिसकी अक़्ल दिखाई देती हो, तो अब अक़्ल के बग़ैर देखे मानते हो या नहीं। उसने कहा, मानता हूं, मैंने कहा, अन्दाज़े से नहीं मानते, बल्कि निशानी से मानते हैं। आप मुझे अक़्ल वाला कह लें, क्योंकि मुझमें अक़्ल वाली निशानी है, वह यह कि आदमी बहकी-बहकी बातें न करे और आदमी ढंग के काम करे, तो उसके अन्दर अक़्ल है और जब आदमी की अक़्ल खो जाती है तो बहकी-बहकी बातें करता है, पत्थर मारता है, गालियां देता है। इस निशानी से आपने अक़्ल को माना, आपने देखकर नहीं माना। उसने कहा, यह बात तो है, अक़्ल दिखाई नहीं देती बग़ैर देखे निशानियों और अलामतों से माना। मैंने कहा, दूसरी मिसाल आपके अन्दर और मेरे अन्दर रूह है, जान है और यह रूह और जान आपने किसी की देखी है? आपरेशन जब करते हो आपको यह रूह और जान उस वक़्त भी दिखाई नहीं देती, लेकिन रूह को जो माना, बग़ैर देखे निशानी से माना। निशानी क्या है वह? आदमी की आंख देखती है, कान सुनते हैं, हाथ पकड़ते हैं, नाक सूंघती है, पांव पकड़ते हैं, ये निशानियां हैं वे जिनसे आपने पहचान लिया कि आदमी ज़िंदा है। सोए सांप पर चींटी नहीं आती, मरे सांप पर आती है। सोए आदमी को गिध नहीं खाता, मरे आदमी को गिध खाता है। मैं और आप रूह को मानते हैं, चींटी और गिध रूह को मानते हैं, हालांकि दिखाई नहीं देती। हवाई जहाज़ में चारों तरफ़ का मज्मा और जितने उर्दू जानने वाले थे, सब मुतवज्जह हो गए। मैंने कहा, दो चीज़ें मैंने बताईं, अक़्ल और रूह दोनों को बग़ैर देखे माना। एक तीसरी चीज़ ले लो। जंगल बयाबान के अन्दर कोई मकान बना हुआ

आपने देखा, तो फ़ौरन यह बात आपके ज़ेहन में आ गयी कि यह मकान ख़ुद नहीं बना, कोई इसका बनाने वाला होगा। क्या आपने उसके बनाने वाले को देखा? उसने कहा, नहीं। मैंने कहा कि आपने उस मकान के बनाने वाले को माना बग़ैर देखे, लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि वह मकान बनाने वाला काला है या गोरा। उसने कहा, हां यह तो नहीं बता सकता। मैंने कहा, लेकिन इतना आपको मानना पड़ेगा कि बनाने वाला है। उसने कहा, मानता हूं। मैंने कहा, मकान निशानी है इस बात की कि उसका कोई बनाने वाला है।

मैंने कहा, एक चौथी बात ले लो। मैं आपको डाक्टर मानता हूं, हालांकि आपको कालेज जाते हुए मैंने नहीं देखा, वह सर्टीफिकेट मैंने नहीं देखा, लेकिन इसके बावजूद मैं आपको डाक्टर मानता हूं, क्योंकि वह निशानी आपके अन्दर है कि आप बीमारों को देखते हैं, दवा देते हैं, तबियत ठीक हो जाती है। यह निशानी है इस बात की कि आप डाक्टर हैं। इस निशानी से मैंने आपको डाक्टर माना। इसके बाद पांचवीं बात है, फिर छठी बात नहीं बताऊंगा, क्योंकि हैं तो करोड़ों, मैं आख़िर कहां तक बताऊंगा। पांचवीं बात ऐसी है कि बे-पढ़ा भी उसको मानता है। उसने कहा, वह क्या? मैंने कहा, जंगल-बयाबान में कोई ऊंट गुज़र गया, एक देहाती ने ऊंट को जाते हुए तो देखा नहीं, लेकिन उसकी मेंगनी और उसके चलने के निशान देख लिए तो उसने बग़ैर देखे, ऊंट को माना कि नहीं? उसने कहा, हां माना। मैंने कहा, ऊंट देखा तो नहीं। उसने कहा, नहीं। मेंगनी से और उसके पैरों के निशानों से माना, तो मैंने कहा कि बग़ैर देखे एक बे-पढ़ा आदमी ऊंट को मानता है उसकी निशानी से, तो आप

डाक्टर साहब, पढ़े-लिखे और करोड़ों पढ़े-लिखे उनको इतना भी नहीं मालूम कि इस क़दर बड़ा आसमान, इतनी बड़ी ज़मीन, इतना बड़ा चांद और मनी की दो बूंदों से इतने बड़े इंसान का बनना, छोटे से बीज से इतने बड़े पेड़ का पैदा होना, ये सारी बातें इस बात की निशानी हैं कि उनका बनाने वाला भी है। मेंगनी से ऊंट तो समझ में आ गया और आसमान-ज़मीन से उसका बनाने वाला समझ में नहीं आया। मैंने कहा, इस बनाने वाले को हम अल्लाह कहते हैं और बग़ैर देखे उसको मानते हैं, लेकिन निशानी से मानते हैं–

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ ...... لِلْعَالَمِيْنَ

'और उसकी आयतों में से है आसमानों का पैदा करना. . . . दुनिया वालों के लिए।'

अल्लाह तआला की निशानियों में से ज़मीन और आसमान है बग़ैर किसी खम्भे के बना हुआ है, हज़ारों सालों के गुज़रने के बाद उसमें कोई दराड़ नहीं पड़ी और हज़ारों सालों से ज़मीन अपने निज़ाम पर क़ायम है और अल्लाह की निशानियों में से तुम्हारे लहजे और तुम्हारी आवाज़ों का अलग-अलग होना और तुम्हारी शक्लों का अलग-अलग होना, यह निशानी है अल्लाह की। अल्लाह की पैदा करने की सिफ़त तो देखिए, जितने इंसान अल्लाह ने बनाए, उतनी आवाज़ें और शक्लें अल्लाह ने बनाईं।

अल्लाह के ख़ज़ाने के अन्दर शक्लें और आवाज़ें बे-हिसाब हैं। आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से लेकर आज तक जितने इंसान अल्लाह ने बनाए और आगे जितने बनाएंगे, उतनी आवाज़ें बनाएंगे,

हालांकि हर एक को वही दो आंखें, वही दो कान, वही एक नाक वग़ैरह, यानी फ़र्क़ नहीं है कि एक बाप के दस बेटे किसी को पहचानने के लिए तीन आंखें और पांच कान दे दिए। ऐसा नहीं है, ख़ुदा ने सबको बराबर कर दिया है, लेकिन आप देखें कि लाखों की तायदाद में हर आदमी की शक्ल बदली होती है। अल्लाह के ख़ज़ाने में हर एक चीज़ बे-हिसाब है।

दुनिया की चीज़ें और ख़ुदाई तरीक़ा

दुनिया छोटा बरतन है, यहां अल्लाह थोड़ा-थोड़ा डालते हैं। आख़िरत बड़ा बरतन है, वहां पर अल्लाह ज़्यादा डालेंगे जैसे तरबूज़ का एक बीज ले लो। उसके अन्दर अगर कोई कहे कि करोड़ों तरबूज़ हैं, तो यह बात भी उसने पूरी नहीं कही। अगर कोई कहे कि एक बीज में बेहिसाब तरबूज़ हैं, तो यह बात उसने पूरी की, इसलिए कि एक बीज को लेकर आपने ज़मीन में डाला, उसको पानी दिया, उसकी बेल निकली, चार महीने के अन्दर-अन्दर ऐसे दस तरबूज़ तैयार हो गए। अब दस तरबूज़ जो तैयार हुए तो फिर हर तरबूज़ के अन्दर बीसियों बीज हैं और हर बीज के अन्दर दसियों तरबूज़ हैं, लेकिन अल्लाह ने ऐसा इन्तिज़ाम किया कि सारे तरबूज़ एक साथ ही नहीं तैयार हो जाते वरना अल्लाह पाक तो इस पर क़ुदरत रखते हैं कि यह धीमे-धीमे जो कुछ दे रहे हैं, सारा एक दम दे दें तो यह ज़मीन व आसमान का सारा ख़ला तरबूज़ों से भरा हुआ हो, रेल और मोटर और हवाई जहाज़ अपनी-अपनी जगह पर जाम हो जाएं। हम और आप अपनी-अपनी जगह पर जाम हो जाएं, एक दूसरे को देखना

मुश्किल हो जाए। फिर आसमान व ज़मीन के अन्दर जितने तरबूज़ होंगे, उनमें से हर एक में फिर बीसियों बीज और दसियों तरबूज़ होंगे, गोया अल्लाह ने एक-एक ज़र्रे में कायनात भर रखी है, लेकिन अल्लाह इस दुनिया में धीमे-धीमे हर चीज़ को चलाते हैं, एकदम से नहीं चलाते। अब देखें, तरबूज़ जो निकला, उसके अन्दर का लाल गूदा खाया इंसान ने और उसके ऊपर का मोटा छिलका खाया भैंस ने और उसके अन्दर के ये दाने खाए मुर्ग़ी ने। मुर्ग़ी ने जो दाने खाए, तो उसके अन्दर बना अंडा और भैंस ने जो छिलका खाया, तो उसके अन्दर दूध बना। अब इस इंसान ने उस गूदे को अलग खाया, अंडे को अलग खाया और दूध को अलग पिया। ये सब चीज़ें अल्लाह ने इंसान की तर्बियत के लिए बनाई हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन पालने वाले अल्लाह हैं।

भेजे जाने का मक़्सद

मेरे मोहतरम दोस्तो! ये सारी बातें मैं इसलिए कर रहा हूं कि आप लोगों को पूरी दुनिया में जाकर दावत देनी है और पूरी दुनिया में दावत की फ़िज़ा बनानी है, क्योंकि कोई नबी आने वाला नहीं है और दुनिया के अन्दर अल्लाह पाक ने हमें भेजा, वह इसी काम के लिए भेजा है, हमें खाने और कमाने के लिए नहीं भेजा। खाना-कमाना तो हमारी एक ज़रूरत की चीज़ है, तो उसके अन्दर हमें ज़रूरत के मुताबिक़ लगना है। हमारी दो हैसियतें हैं। एक हैसियत अल्लाह का बन्दा होने की, दूसरी हैसियत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती होने की। अल्लाह का बन्दा होने की हैसियत से

हमारी ज़िंदगी का मक़्सद बन्दगी है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उम्मती होने के एतबार से हमारी ज़िंदगी का मक़्सद दावत है। इबादत के मानी अल्लाह की बात को मानना और दावत के मानी अल्लाह की बात के मनवाने की कोशिश करना। मनवाना तो किसी के बस में नहीं है। हम अपनी बीवी और अपनी औलाद का दिल भी नहीं पलट सकते, बल्कि ख़ुद अपना दिल भी नहीं पलट सकते। इतने बड़े मज्मे का दिल पलटना तक़रीर करने वाले के हाथ में नहीं होता, बल्कि दिलों को पलटा खिलाना ख़ुद अल्लाह के हाथ में है। हमारे ज़िम्मे अल्लाह जल्लजलालुहू ने कोशिश रखी है।

दीन का काम करने में रुकावट

और देखो, एक बात मैं बताऊं, रुकावट क्या चीज़ बनती है? दीन का काम करने में रुकावट कारोबार और खेती बनती है। इसमें एक बात अच्छी तरह समझ लो और ज़ेहन में बिठा लो कि दुनिया रोज़ी और माल, यह अल्लाह हर आदमी को उतनी देगा, जितनी उसके लिए लिख रखी है, उससे कम और उससे ज़्यादा नहीं देगा। रोज़ी का मामला अक़्ल और मेहनत पर नहीं। रोज़ी पर मेहनत तो करनी पड़ेगी, आदमी मेहनत करे, लेकिन एक बात ज़ेहन में बिठा ले कि रोज़ी मेहनत ज़्यादा करने पर ज़्यादा और कम करने पर कम मिलेगी या अक़्ल ज़्यादा होगी तो ज़्यादा मिलगी और अक़्ल अगर कम होगी तो कम मिलेगी, यह बात बिल्कुल ग़लत है।

ज़मीन और आसमान के बनने से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह ने एक मख़्लूक़ बनाई, जिसका नाम क़लम है, उसके ऊपर

इल्म का फ़ैज़ान किया तो जो कुछ होने वाला था और जिसको जो मिलने वाला था, वह सब कुछ उस क़लम ने लिख दिया। अब जितना हमारे तुम्हारे लिए अल्लाह ने लिख दिया, वह तो उतना ही मिलेगा। हम दुनिया में तजुर्बा करके देख लें, क़ुरआन की आयत बता रही है और आम तजुर्बा भी यह है, अल्लाह फ़रमाते हैं—

اللهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ

'अल्लाह जिसके लिए चाहता है, रोज़ी बढ़ा देता है और जिसे चाहता है, बांध देता है।'

रोज़ी का ताल्लुक़ अक़्ल व मेहनत से

अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, रोज़ी ज़्यादा देता और जिसे चाहता है, रोज़ी कम कर देता है। कहीं आप यह नहीं बता सकोगे कि ज़्यादा मेहनत करने पर रोज़ी ज़्यादा और कम मेहनत पर रोज़ी कम मिले, ज़्यादा अक़्ल वाले को ज़्यादा और कम अक़्ल वाले को कम मिले और तजुर्बा भी यही बताता है कि ज़्यादा मेहनत पर अगर रोज़ी ज़्यादा मिलती, तो यह मेहनत और मज़दूरियां करने वाले ज़्यादा कमाते और हम देखते हैं कि यह मेहनत और मज़दूरियां करने वाले मुश्किल से 30 रुपए लेते हैं, जबकि आठ घंटे मज़दूरी करें, लेकिन एक कारोबारी कभी-कभी सौदा करता है एक माल का पन्द्रह मिनट में और दूसरे पन्द्रह मिनट में उसे बेच देता है और पचास हज़ार का फ़ायदा हो जाता है। उसे थोड़ी मेहनत और पचास हज़ार रुपए मिले और ज़्यादा मेहनत करने वाले को 30 रुपए मिले। अगर

मामला मेहनत पर होता तो मज़दूर को ज़्यादा मिलते और कारोबारी को कम मिलते, लेकिन हम इसका उलट देखते हैं।

कभी-कभी एक बात ज़ेहन में आती है कि मज़दूर कम अक़्ल वाला है और कारोबारी ज़्यादा अक़्ल वाला है, तो रोज़ी का मामला अक़्ल पर भी नहीं है, क्योंकि बहुत से आदमी दुनिया में देखे गए हैं, जिन्हें लिखना-पढ़ना कुछ भी नहीं आता और ख़ुद अपना नाम भी नहीं लिख सकते और अंगूठा लगाते हैं, लेकिन कारोबार उनका लाखों का चलता है और इस कारोबार को कन्ट्रोल करने के लिए और इसका हिसाब-किताब रखने के लिए जो मुंशी रखे जाते हैं बी.काम और एम.काम, उनमें से हर एक मुंशी की तंख्वाह 2500 रुपए माहाना है। अब जो लोग बी. काम और एम.काम हैं उनकी तंख़्वाह तो 2500 रुपए माहाना है और जो अंगूठा लगाने वाला है उसकी रोज़ाना की लाखों रुपए की उलट-पुलट होती रहती है, तो मामला अगर अक़्ल पर होता तो पढ़ा-लिखा करोड़पति और अंगूठा लगाने वाला हज़ारपति होता।

अब देखो, इसमें कोई अक़्ल भी ज़्यादा नहीं और कुछ मेहनत भी ज़्यादा नहीं, लेकिन, اللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ 'अल्लाह ही रोज़ी बढ़ाता है' वाली बात है कि अल्लाह जिसको चाहता है, ज़्यादा देता है और जिसको चाहता है, कम देता है। उसको थोड़े वक़्त में ज़्यादा देना तै कर दिया था, ज़्यादा दे दिया, मेहनत भी ज़्यादा नहीं, अक़्ल भी ज़्यादा नहीं, तद्बीर भी ज़्यादा नहीं, लेकिन लौहे महफ़ूज़ पर लिखा हुआ था, मिल गया।

एक बात अगली भी सुन लो कि दीन और ईमान, यह अल्लाह आदमी को इतना देंगे जितना आदमी मेहनत करेगा, पूरा क़ुरआन

इसी से भरा हुआ है— لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ

और दूसरी जगह है— وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

और इसी तरह— سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا

हर जगह कोशिश का ज़िक्र है कि जितनी कोशिश करोगे, उतना मिलेगा, लेकिन माल व दौलत जितना अल्लाह ने लिख दिया है, उतना मिलेगा। कभी-कभी आदमी के पास माल व दौलत बहुत होता है, लेकिन डाक्टर ने उसको कह दिया कि तू गोश्त नहीं खा सकता, इसलिए कि तुझे ऐसी बीमारी है कि गोश्त तुझे नुक़सान देगा, तो बावर्ची से कह दिया कि मेरे दस्तरख़ान पर मेरे लिए दाल रखे तो देखिए करोड़पति के सामने तो पड़ी है दाल और उसका बावर्ची ग़रीब आदमी, उसके सामने रखा है, मुर्ग़ा हलाल का, हराम का नहीं, क्योंकि उसने कह रखा है कि जो तू पकाए, उसमें से तुझे जो कुछ खाना हो, खा ले।

इसलिए मेरे मोहतरम दोस्तो! सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन के दिल में यह बात बैठ चुकी थी, इसलिए उन्होंने दीन के फैलाने पर बेहद मेहनत कर डाली और पूरी दुनिया में फ़िज़ा बना डाली, इसलिए कि उनके दिलों में क़ीमत ईमान की बैठी हुई थी। यह तीन रकूअत मग़्रिब की नमाज़ उसका असल बदला जितना है, अल्लाह अगर दे डाले, तो पूरे ज़मीन व आसमान के दर्मियान समा नहीं सकता, इसलिए आमाल का बदला देने की जगह अल्लाह ने आख़िरत रखी है।

इंसानी सोच की सतह

हर इंसान की एक सतह है। अगर वह अपने से ऊपर वाले की सतह को मान ले, जैसे एक बच्चे की सतह है, वह है 6 साल का, एक है उसके बाप की सतह, वह है 36 साल का। नाना ने बच्चे से कहा कि या तू जलेबी ले ले या अंगूठी और वह अंगूठी पचास लाख की है, मिसाल के तौर पर उसके अन्दर सच्चा मोती जड़ा हुआ है। यह बच्चा अगर अपनी सतह से काम करेगा तो जलेबी लेगा, लेकिन बाप उसे समझाता है कि जलेबी न ले, वह कहता है कि जलेबी बड़ी है, अंगूठी छोटी है, जलेबी मीठी है, अंगूठी फीकी है, ये बातें उसने अपनी सतह से कहीं, लेकिन बाप की सतह बेटे की सतह से ऊंची है, वह कहता है कि देखो, इस अंगूठी के अन्दर जलेबी भी है और बर्फ़ी भी है और उसके अन्दर पंखे भी हैं, उसमें कार और बंगला भी है, तो अंगूठी के अन्दर सब कुछ है। 6 साल का बच्चा इसे बिल्कुल नहीं समझता और वह इसे देखकर कहता है कि इतनी छोटी-सी अंगूठी में इतनी बड़ी-बड़ी चीज़ें कैसे आ जाएंगी। यह तो उसका बाप समझता है कि इस अंगूठी को जाकर बाज़ार में बेचा जाए, पचास लाख रुपए नक़द हाथ में ले लिया जाए, तो फिर जो चाहो, ख़रीदो।

मेरे मोहतरम दोस्तो! तीस साल का फ़र्क़ है। इस तीस साल के फ़र्क़ में एक बेटे ने बाप की बात मानी, जबकि दूसरे ने नहीं मानी, तो एक ने जलेबी ले ली और खा कर मुंह मीठा कर लिया और दूसरे ने अंगूठी ले ली, तो उस वक़्त वह जलेबी वाला बेटा उसे कोस रहा और यह उसे बरदाश्त कर रहा, लेकिन जब ऊपर की सतह पर ये दोनों पहुंचे, तो जिसने अंगूठी ली थी, वह तो बड़े ऐश व आराम में

है और जिसने जलेबी ली थी, वह कंगाल है और सर पर हाथ रखकर यों कहता है, ऐ काश! मैं उस वक़्त अपने बाप की बात मान लेता और इतना परेशान न होता।

मेरे दोस्तो! अब इससे आगे चलो। एक तो हम यहां बैठे हैं, हमारी औलाद है, एक तो हमारी शान है और एक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शान है। हम इतने छोटे कि छोटा होने की कोई हद नहीं है और अल्लाह इतने बड़े कि बड़ा होने की कोई हद नहीं। अब इतना बड़ा अल्लाह हमें नबियों के ज़रिए हमारे आमाल की क़ीमत बता रहा है और चीज़ों का बे-क़ीमत होना बता रहा है। अगर अल्लाह की इस बात को, जो नबियों के ज़रिए हम तक पहुंची, मान लें तो बेड़ा पार है और जिसने नहीं मानी, उसका बेड़ा ग़र्क़ है। एक तरफ़ एक लाख रुपए का गाहक आ गया और दूसरी तरफ़ अस्र की नमाज़ का वक़्त हो गया, तो आदमी अपनी सतह से चलेगा तो वह यह सोचेगा कि गाहक में लगूंगा, तो लाख मिलेगा, नमाज़ में लगूंगा, तो पांच भी नहीं मिलेंगे, लेकिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह फ़रमाते हैं कि, पूरी दुनिया की क़ीमत अल्लाह के नज़दीक अगर मच्छर के पर के बराबर होती, तो काफ़िर को एक घूंट पानी का न देते, लाख की क्या हैसियत है।

अस्र की नमाज़ छोड़ने पर धमकी

और अस्र की नमाज़ के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि जिस आदमी की अस्र की नमाज़ छूट गई, तो गोया उसके घर-बार वाले और सारा कारोबार

तबाह हो गया। यह ऊंची समझ का दुनियादार और कमसमझ जलेबी वाले बेटे जैसा इंसान यों समझता है कि अस्र की नमाज़ छोड़ दी, लाख रुपए ले लिए। अब घर आकर देखता है, बीवी भी ज़िंदा है, बच्चों को देखता है, वे भी ज़िंदा हैं और घर भी सलामत है। अब उसने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात को एहतराम में इसलिए मान लिया कि एहतराम चूंकि उसके दिल में है, लेकिन उसे नहीं क़ुबूल कर रहा है, जहां मुक़ाबले की बात आती है अल्लाह के हुक्मों और चीज़ों की, वहां चीज़ों को ले लेता है और हुक्मों को छोड़ देता है और जहां हुक्म और हालात का मुक़ाबला आ जाए, वहां पर हालात का असर लेकर हुक्मों को छोड़ देता है। हुक्मों का असर लेकर हालात को बरदाश्त नहीं कर पाता, लेकिन उसे मौत पर मालूम होगा, जब दोनों मर गए, लाख लेने वाला और नमाज़ पढ़ने वाला, दोनों क़ब्र में चले गए। इधर से क़ब्र का अज़ाब आया, तो दूसरी तरफ़ से नमाज़ आई। नमाज़ ने उसे रोक दिया। इस नमाज़ पर पांच रुपए तो उस वक़्त नहीं मिले, लेकिन यकायक मुसीबत, जो क़ब्र में उस पर आ रही थी, इस नमाज़ की वजह से रुक गई और वह दूसरा आदमी, जिसने नमाज़ छोड़ दी और लाख ले लिए और यह समझ रहा है कि मेरी बीवी महफ़ूज़, मेरा माल और कैपिटल (Capital) भी महफ़ूज़, अब क़ब्र का अज़ाब आया, नमाज़ तो थी नहीं जो इस अज़ाब को रोकती, अज़ाब ने उसको पकड़ लिया। अब उसकी समझ में आया कि अगर लाख को छोड़कर नमाज़ को ले लेता, तो आज इस परेशानी से बच जाता। अरे! देखने के अन्दर दिखाई देता है कि मर गया, क़ब्र के अन्दर चला गया, बिल्कुल मिट्टी हो गया, अब क्या

होगा? अरे! अब वह होगा जो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया। इंसान समझता है कि जब मर गए तो दोबारा कैसे ज़िंदा होंगे? मेरे मोहतरम दोस्तो! दोबारा ज़िंदा करने वाला अल्लाह होगा, जिसने तुझे आज ज़िंदा किया है। बेशक तुझे दिखाई देता है कि ज़र्रा-ज़र्रा हो गए।

लेकिन इस वक़्त तुझे जो सवा पांच फिट का बदन दिखाई देता है, वह भी तो अल्लाह ने ज़र्रों से बनाया है। यह जब मां के पेट से निकला तो सवा बालिश्त का था और मां के पेट में कुछ उंगली का था। इस बदन को अल्लाह ने तीन अंधेरों में बनाया—

يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلٰثٍ

'अल्लाह तुम्हें माओं के पेटों में तीन-तीन अंधेरों में तर्कीबें बदल-बदल कर बनाता है, कुछ उंगली का बच्चा, लेकिन उसमें आंख, नाक, कान, हंसली, पसली, पंजा, मगर दांत एक भी नहीं, अल्लाह की शान है, क्योंकि अगर वहां पर दांत भी बना दिए जाते, तो दुनिया में आने के बाद मां की छाती से दूध के साथ ख़ून भी पीना पड़ता। अल्लाह ने वहां दांत नहीं बनाए।

हमारे आज़ा (अंग) और ख़ुदा की क़ुदरत

और यहां जो दांत बनाए, अल्लाह की पूरी क़ुदरत और पूरा क़ाबू है हमारे दांतों पर, सर के बाल और नाख़ून बढ़ते चले जाते हैं और आप उसको काटते चले जाते हैं, लेकिन इस तरीक़े पर अगर दांत भी बढ़ने लगे, तो कितनी तक्लीफ़ हो, ऊपर वाले दांत नीचे वालों

से टकराते और आपको डाक्टर के पास दांत घिसवाने के लिए जाना पड़ता या घर के अन्दर दांत घिसने की मशीन रखनी पड़ती, बहुत बड़ी मुसीबत हम पर यह होती। अल्लाह का बहुत बड़ा करम कि दांतों के बढ़ने की एक हद रखी है, इससे आगे नहीं बढ़ते।

ज़ुबान की भी एक हद है, इससे आगे नहीं बढ़ती, क्योंकि ज़ुबान अगर बढ़ती, तो सीने पर लटकती, हाथों पर और पांवों पर ज़मीन पर गिरती तो मिट्टी उसके ऊपर लगती, तो बोलना मुश्किल और खाना मुश्किल, ज़ुबान को बढ़ने नहीं दिया, इसी तरह पलक के बालों को अल्लाह ने बढ़ने नहीं दिया इतने के इतने अगर पलक के बाल न हों, तो कचरा अन्दर चला जाए और अगर बढ़ने लगें तो नज़र आना मुश्किल हो जाए। अल्लाह ने ऐसा इन्तिज़ाम कर दिया कि मेरे बन्दे की आंख में कचरा भी न जाए और उसकी आंख भी बन्द न हो जाए।

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारे दुनिया में आने के बाद हमारे बदन के एक-एक हिस्से पर अल्लाह का क़ाबू है, अल्लाह की क़ुदरत है जैसे मां के पेट में, तो यह बात बहुत जल्दी इंसान की समझ में आ जाती है कि वाक़ई मर्द व औरत उस बच्चे को नहीं बनाते, बल्कि अल्लाह ही बनाता है।

पलने का यक़ीन

इससे आगे एक मंज़िल है, वह यह कि जैसे हम बनने में अल्लाह के मुहताज हैं, उसी तरह हम पलने में भी अल्लाह के मुहताज हैं। जैसे अकेले अल्लाह ने हमको बनाया, ऐसे ही अकेले अल्लाह हमको

पालते हैं। हम दुकान, खेत और पैसों से नहीं पलते, हमको अल्लाह पालता है, यह यक़ीन दिलों के अन्दर जब उतरता है, तो फिर आदमी की ज़िंदगी में दीन आता है। देखें, मैं आपको बताऊं कि आलमे अरवाह के अन्दर सारे इंसानों की रूहों को अल्लाह ने जमा किया और पूछा, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सबने कहा, ऐ अल्लाह! बेशक तू हमारा रब है। अबू जह्ल, क़ारून, फ़िरऔन की रूहों ने भी यह कहा, क्योंकि वहां इम्तिहान की कोई चीज़ नहीं थी, मुल्क व माल, रुपया-पैसा वहां नहीं था, वहां सिर्फ़ अल्लाह था, वहां पर सारे इंसानों की रूहों का इत्तिफ़ाक़ था कि पालने वाले अल्लाह हैं, क़ियामत का दिन जब आएगा, तो वहां पर इंसान यह कहेगा और कट्टर से कट्टर काफ़िर भी—

رَبَّنَا اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ

(سورہ سجدہ پارہ ۲۲)

'ऐ हमारे रब! हमारी आंखें खुल गईं, हमारे कान खुल गए, हमें यक़ीन हो गया, हमको दुनिया के अन्दर वापस कर, अब हम अच्छे अमल करके आएंगे। हमारी समझ के अन्दर बात आ गई कि ये सारी चीज़ें बेकार हो गईं मरने के बाद—और आमाल ही कारामद, लेकिन वे आमाल हमने नहीं किए, ऐ अल्लाह! तू हमको दुनिया में वापस कर।' वहां पर भी हर एक आदमी, चाहे काफ़िर और मुश्रिक ही क्यों न हो, वह अल्लाह को रब कहेगा। आग के ज़माने का रास्ता बिल्कुल साफ़ है कि सब अल्लाह को रब कहेंगे बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के और पिछले आलमे अरवाह में सबने अल्लाह को रब

कहा बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के, पिछली लाइन भी साफ़, अगली लाइन भी साफ़, दोनों लाइनें बिल्कुल क्लियर हैं। अब जो बीच की लाइन है दुनिया, उसके अन्दर भी हम कह दें कि अल्लाह हमारा रब है और सिर्फ़ ज़ुबान से नहीं, बल्कि दिल के अन्दर की यह आवाज़ बन जाए तो पिछली लाइन से पिछली लाइन मिल गयी और अगली लाइन से अगली लाइन मिल गई और यह हो गया सिराते मुस्तक़ीम, बिल्कुल सीधा रास्ता, जो अल्लाह की रिज़ा तक पहुंचाने वाला, जन्नत के अन्दर पहुंचाने वाला, क़ब्र के अन्दर ख़ुदा की रहमतों को बरसाने वाला और वही सीधा रास्ता, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، سُبْحَانَ رَبِّىَ الْاَعْلٰى 'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन', 'सुब-हा-न रब्बियल आला' पालने वाला एक अल्लाह है, उसका यक़ीन आदमी के दिल के अन्दर उतर जाए।

बग़ैर कारोबार और खेती के परवरिश

देखिए, एक दूसरे तरीक़े से आपको समझाता हूं। मां के पेट के अन्दर बग़ैर दुकान और खेती के अल्लाह ने पाला, जन्नत के अन्दर बग़ैर दुकान-खेती के अल्लाह पालेगा, इस दुनिया के अन्दर हाथियों को और चींटियों को, बल्कि व्हेल मछली को भी जो पहाड़ों के बराबर होती है और सैंकड़ों इंसानों के बराबर खा जाती है, लेकिन उसका कोई कारोबार नहीं होता, उसको भी अल्लाह तआला पालते हैं।

सीधी बात है कि जब हम सबको अल्लाह बग़ैर कारोबार के पालते हैं, तो ज़रा थोड़ा-सा दिमाग़ पर बोझ डालें कि क्या यह छोटा-सा दो बालिश्त का पेट उसकी परवरिश के लिए अल्लाह

तआला हमारे कारोबार का मुहताज हो गया? हरगिज़ नहीं। कारोबार की तर्कीब अल्लाह ही ने हमारे सामने डाली, अल्लाह ने कह दिया—

اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ

'सच्चा, अमानतदार ताजिर नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और भले लोगों के साथ होगा', तो तिजारत क़ुरआन व हदीस में मौजूद है। सोचने की बात यह है कि जब मां के पेट और जन्नत में कारोबार की तर्कीब नहीं है, इसी तरह इंसानों के अलावा जानवरों के कारोबार की तर्कीब नहीं है, तो इंसान के दो बालिश्त पेट के लिए अल्लाह ने कारोबार की तर्कीब क्यों रखी?

इतनी बात तो आपको माननी पड़ेगी कि हाजत की वजह से नहीं रखी, अल्लाह पाक जब इतनी बड़ी मछली को बग़ैर कारोबार के पाल सकता है तो दो बालिश्त के पेट को भी पाल सकता है, लेकिन कारोबार उसने हमारे सामने इम्तिहान के लिए डाला है कि कौन आदमी कारोबार करके अपनी परवरिश को अल्लाह के हाथ में समझता है और कौन परवरिश के कारोबार में समझता है। जो अपनी परवरिश को अल्लाह के हाथ में समझेगा, वह उतना करेगा जितनी इजाज़त मिलेगी और ऐसे करेगा जैसे इजाज़त मिलेगी वह आज़ादी के साथ कारोबार में नहीं लगेगा, इसलिए कि वह कहेगा कि मैं कारोबार में पलने के लिए नहीं लगा, बल्कि पालने वाले को राज़ी करने के लिए बैठा हूं। इसी बात को सिखाने के लिए तबूक के मौक़े पर अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए आयतें उतर आईं—

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالاً وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ

'हलके हो या भारी, हर हालत में निकलो।'

कामियाबी या नाकामी

अब कारोबार के सीज़न में जब निकलने का हुक्म हुआ तो जैसे हम लोगों पर बोझ बनता है कि एक तरफ़ तो कारोबार का सीज़न, दूसरी तरफ़ निकलने का हुक्म। सहाबा किराम भी इंसान थे, उन पर भी बोझ पड़ा, उन पर जब बोझ पड़ा, तो आयतें उतरीं—

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا (اِلٰى قَوْلِهٖ: قَدِيْر)

'ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में निकलो, तो तुम ज़मीन पर बोझल होकर बैठ जाते हो, क्या तुम दुनिया पर राज़ी हो गए, आख़िरत को छोड़कर दुनिया की ज़िंदगी आख़िरत के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखती।'

اِلاَّ تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلاَ تَضُرُّوْهُ شَيْئًا

'अगर तुम न निकले तो अल्लाह तुमको दर्दनाक अज़ाब देगा और अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम बदल कर ले आएगा और तुम अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकोगे।'

जब ये आयतें उतरीं, तो सहाबा किराम रज़ि० ने अपने कारोबार के मीज़ान को छोड़ा और अल्लाह के रास्ते में निकल गए, इसलिए

कि उनके ज़ेहन में था कि पालने वाले अल्लाह हैं, इसलिए जब उसका हुक्म कारोबार में लगने का मिलेगा, तो हम कारोबार में लग जाएंगे। जुमा की नमाज़ के बारे में अल्लाह फ़रमाते हैं وَذَرُوا الْبَيْعَ कि कारोबार छोड़ दो, छोड़ दिया, नमाज़ की तरफ़ चल दिए और जब नमाज़ पढ़ ली, فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ 'तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह की रोज़ी तलाश करो', लेकिन उस रोज़ी को तलाश करने के लिए अल्लाह ने एक और शर्त लगा दी, وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ 'देखना अल्लाह को बहुत याद करना। कामियाबी तो तुमको मिलेगी, लेकिन जब अल्लाह को बहुत याद करोगे।'

बहुत याद करने का क्या मतलब? यानी अल्लाह पाक के हुक्मों का कारोबार में बहुत ज़्यादा ख़्याल रखे, ऐसा न हो कि नमाज़ पढ़ने के बाद सीधा यहां से गया और वहां जाकर हराम तरीक़े से कारोबार चलाना शुरू किया, ऐसे कारोबार के अन्दर वह आदमी कामियाब नहीं होगा। आप कहेंगे कि मौलवी साहब! हम तो अल्लाह के हुक्मों को तोड़ कर भी कारोबार के अन्दर कामियाब हो गये, इसलिए कि बहुतेरा माल इस तरीक़े से मिलने लगा। इंसान को यह बड़ा धोखा लगता है।

नाफ़रमानियों के बावजूद अगर अल्लाह साज़ व सामान दे तो आदमी यों समझता है कि अल्लाह ने बड़ी बरकत दे दी, ऐसा नहीं होता, बावजूद नाफ़रमानियों के साज़ व सामान का मिलना वह बरकत नहीं। याद रखना चाहिए साज़ व सामान का ज़्यादा होना बरकत नहीं है, नाफ़रमानियों के साथ बरकत हो नहीं सकती, वरना क़ारून के पास तुम बरकत ही बरकत कहो। फ़रमांबरदारी के साथ

बरकत होती है। फ़रमांबरदार को अगर अल्लाह साज़ व सामान दे, तो वह सुलैमानी और दाऊदी लाइन चलेगी और नाफ़रमान को अगर अल्लाह साज़ व सामान दे तो वह फ़िरऔनी लाइन चलेगी। ख़ूब याद रखना, फ़रमांबरदार पर अगर कोई तक्लीफ़ आ जाए तो वह दीनी लाइन की तक्लीफ़ है और नाफ़रमान पर अगर कोई तक्लीफ़ आ जाए तो वह क़ारूनी लाइन की होगी। मियां, तक्लीफ़ तो यूनुस अलैहिस्सलाम पर मछली के पेट में भी आई और तक्लीफ़ क़ारून को ज़मीन में धंसने से भी हुई लेकिन दोनों में बहुत फ़र्क़ है।

अच्छे आदमियों पर परेशानियां

बहुत से लोग हमें कहते हैं, तब्लीग़ में नहीं लगा था, नाफ़रमान था, फिर भी मैं परेशान था और तब्लीग़ में लग गया, फिर भी परेशान हूं। इसी तरह की बात क़ौम बनी इस्राईल ने मूसा अलैहि० से भी कही थी أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا

कि अभी आप तशरीफ़ नहीं लाए थे, हम नाफ़रमान थे, फ़िरऔन हमको सताता था और अब आप भी तशरीफ़ लाए हैं और हम फ़रमांबरदार हो गए हैं, फिर भी फ़िरऔन हमको सताता है, हमारी तक्लीफ़ों में कोई फ़र्क़ नहीं है।

मोहतरम दोस्तो! याद रखो आख़िरत बदले का घर है। वहां भले आदमियों को नेमतें मिलेंगी और बुरे आदमी पर तक्लीफ़ें आएंगी। यह तैशुदा बात है, इसका उलट नहीं होगा कि एक आदमी भला है, उसे तक्लीफ़ हो। वहां जाकर हरगिज़ यह नहीं होगा और ऐसा भी नहीं होगा कि एक आदमी बुरा है, उसे नेमतें मिलें। वहां जाकर

अल्लाह के नज़दीक जो भला है, उसको वहां पर नेमतें और अल्लाह ने जिसको बुरा क़रार दे दिया, उसको वहां पर तक्लीफ़ें, लेकिन दुनिया के अन्दर इसका उलट भी होगा, क्योंकि दुनिया इम्तिहान की जगह है।

दुनिया और हश्र में इम्तिहान की शक्लें

और यहां पर अल्लाह ने इम्तिहान की दो शक्लें रखी हैं। क़ब्र में तीन सवाल, مَنْ رَبُّكَ، مَادِيْنُكَ، مَنْ نَبِيُّكَ 1. तुम्हारा रब कौन है? 2. तुम्हारा दीन क्या है? 3. तुम्हारा नबी कौन है? और हश्र में पांच सवाल हैं, 1. उम्र कहां गुज़ारी? 2. जवानी कहां लगायी, 3. माल कहां से कमाया? 4. और कहां पर ख़र्च किया, 5. और जो जानता था, उस पर कितना अमल किया? और दुनिया में दो बातों का इम्तिहान होगा, कभी तक्लीफ़ें डालकर ख़ुदा इम्तिहान लेगा और कभी राहतें डालकर ख़ुदा इम्तिहान लेगा। तक्लीफ़ों में अगर सब्र किया तो पास हो गया और अगर मायूस हो गया तो फ़ेल हो गया। राहतों के अन्दर अगर शुक्र किया और नेमतों को अल्लाह पाक ने बढ़ा दिया, तो पास हो गया और नेमतों में अगर फ़ख्र किया, तो फ़ेल हो गया। दुनिया के अन्दर कभी-कभी नाफ़रमान पर तक्लीफ़ आती है और कभी-कभी राहत आती है, लेकिन शक्ल अलग-अलग होती है।

ग़ौर से समझ लो, अगर आदमी दुनिया के अन्दर कोई गुनाह का काम करता है, तो अल्लाह फ़ौरी पकड़ नहीं फ़रमाते, गुनाह करने वाले को अल्लाह ढील देते हैं, देखो अल्लाह के यहां ज़ुल्म तो बिल्कुल नहीं,

लेकिन ढील बहुत है। जहन्नम और क़ब्र की जितनी भी तक्लीफ़ें इंसान पर आती हैं, यह अल्लाह का ज़ुल्म नहीं है, बल्कि इंसान के करतूत हैं। जब आदमी गुनाह करता है, तो अल्लाह ढील देते हैं, लेकिन ढील देने का यह मतलब नहीं है कि वह फिर पकड़ नहीं करेंगे, पकड़ की अल्लाह तारीख़ मुक़र्रर कर देते हैं और इंसान को ढील देते रहते हैं। नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम को 950 साल तक ढील दी, फ़िरऔन व क़ारून को ढील दी। इस ढील के ज़माने में अगर आदमी तौबा कर ले, तो बच जाएगा और पकड़ की तारीख़ आ जाए तो फिर

اِذَا جَاءَ اَجَلُهُمْ لاَ يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلاَ يَسْتَقْدِمُوْنَ

अल्लाह पकड़ कर छोड़ते नहीं हैं।

गुनाह पर पकड़ फ़ौरी नहीं है

लेकिन अगर गुनाह पर अल्लाह तआला फ़ौरी पकड़ करें, तो कोई आदमी ज़िंदा नहीं रह सकता

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ
وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلَى اَجَلٍ مُّسَمًّى

फिर ज़मीन पर चलने वाला कोई आदमी नहीं मिलेगा। अगर एक आदमी ने ज़िना किया और फ़ौरन फ़रिश्ते ने आकर दो डंडे मार दिए तो वह फ़ौरन वहीं मर जाएगा, इसलिए ग़लत काम करने वाले को अल्लाह ढील देते हैं और सही काम करने वाले पर अल्लाह डालते हैं आज़माइश। सहाबा किराम पर डाल दिया इम्तिहान और मुशिरकीन

मक्का को दे दी ढील। मक्का के मुश्रिक यह कहते हैं कि हमारे तो (360) और तुम्हारा एक, यानी क्वानटिटी (तायदाद) ज़्यादा और तुम्हारी क्वानटिटी (तायदाद) कम। सहाबा किराम रज़ि० ने उन्हें समझाया कि क्वानटिटी (तायदाद) उस वक़्त देखी जाती है जब क्वालिटी एक हो, यहां क्वालिटी बदली हुई है। तुम्हारे (360) इतने बोदे कि सब मिलकर एक मक्खी भी नहीं बना सकते और अगर उनसे कुछ लेकर भाग जाए तो छुड़ा नहीं सकते, लेकिन हमारा एक अल्लाह इतनी ताक़तों वाला है कि उसी एक ने आसमान, ज़मीन, चांद, सितारे, सूरज सब कुछ बना दिया।

इसलिए मेरे मोहतरम दोस्तो! चूंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी आने वाला नहीं है, इसलिए हम पूरी दुनिया में फैल जाएं, अल्लाह की इस क़दर बड़ाई बयान करें कि वह हमारे अपने और दूसरे के दिलों में भी उतर जाए। आज अल्लाह को बड़ा नहीं जाना, अगर आदमी अल्लाह को बड़ा जाने, तो नाफ़रमानी नहीं कर सकता। अगर हो जाए भूल से तो फ़ौरन खटक पैदा हो जाएगी और आदमी अल्लाह से तौबा करेगा।

अल्लाह की ताक़त को न समझने की मिसाल

देखो, एक मिसाल से समझाता हूं। अगर चार साल का बच्चा मुहल्ले में शोर मचाता है, आपने उससे कहा, देख, यहां से चला जा, वरना पुलिस कमिश्नर को बुलाता हूं, वह पिस्तौल लाएगा, बच्चा फिर भी शोर मचाता है। अब पुलिस कमिश्नर पिस्तौल लेकर आ गया, तो यह बच्चा उस कमिश्नर की गोद में

बैठकर पिस्तौल से खेलेगा, क्योंकि जानता नहीं, लेकिन उसी बच्चे को अगर कह दो, तेरी मां को मैं बुलाता हूं, वहीं सहम जाएगा कि मेरी मां को मत बुलाओ, मैं जाता हूं और अगर उसकी मां ने घर से निकल कर सौ क़दम के फ़ासले पर तमांचा दिखा दिया, तो वहीं कान पकड़ लेगा कि अम्मां! मेरी तौबा, अब मैं नहीं करूंगा। ज़रा सोचो, पुलिस कमिश्नर की ताक़त ज़्यादा है मां की ताक़त से और पिस्तौल की ताक़त ज़्यादा है, चांटे की ताक़त से? अब यह पिस्तौल से नहीं डरता और चांटे से डरता है, इसलिए कि मां और चांटे की ताक़त को जानता है और कमिश्नर के पिस्तौल की ताक़त को नहीं जानता और उसके बाप को अगर यह कह दिया जाए कि मैं पुलिस को बुलाता हूं, वह पिस्तौल लेकर आएगी, तो यह सहम जाएगा, इसलिए कि यह पुलिस और हुकूमत की ताक़त को जानता है। इसी तरह आम इंसान हुकूमत की ताक़त को समझता है, इसलिए हुकूमत के क़ानून के ख़िलाफ़ करते हुए आदमी डरता है, हालांकि जितनी ताक़तें सारी दुनिया की हुकूमतों के पास हैं, उससे कहीं ज़्यादा ताक़तें अह्कमुल हाकिमीन के पास हैं। अब यह आदमी अह्कमुल हाकिमीन से नहीं डरता, इसलिए कि अल्लाह के क़ानून की बड़ाई उसके दिल में नहीं है, जैसे वह बच्चा पिस्तौल को नहीं जानता, उसी तरह उसका बाप अल्लाह को नहीं जानता।

इस दुनिया में अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी दावत में अल्लाह की अज़्मत और बड़ाई को बयान किया करते थे, इस वजह से यह काम हमको करना है। अगर जुबान से अल्लाह का अच्छा बोलबाला

हुआ, तो यह ज़ुबान का बोल बनेगा, लेकिन जब दिल के अन्दर यह बात उतरेगी तो याद रखो, यह ईमान बनेगा और जब ईमान बनेगा, तो ईमान पर अल्लाह के जो वायदे आसमानों पर हैं वे वायदे ज़मीन पर आएंगे। चुनांचे सहाबा किराम रज़ि० ने उन सबको यही कहा और वे सारे के सारे हैरत में पड़ गए, क्योंकि उनका तो हज़ारों सालों का यही अक़ीदा अपने बुतों के बारे में था, उन्हें तो बहुत ताज्जुब हो रहा था—

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ

कुफ़्फ़ार ने कहा, तुम अपने माबूदों से चुपके रहो और उनकी बात बिल्कुल न मानो, क्योंकि सारे माबूदों को छोड़कर एक माबूद को उन्होंने लिया है, लेकिन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का वही जवाब था। इसके बाद उन मुश्रिकों ने ताने देने शुरू किए। तुम कहते हो, एक है बचाने वाला, देखो, हमने तुम्हारे बिलाल (रज़ि०) को मारा और हमने सुमैया (रज़ियल्लाहु अन्हा) को मारा और हमने फ़्लां को मारा, वह एक अल्लाह तुम्हारी मदद क्यों नहीं करता? यह बड़ी हैरत का मक़ाम हर ज़माने के अन्दर है कि जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं, वे मार रहे हैं और जो फरमांबरदार हैं, वे मार खा रहे हैं। अच्छा, साथ-साथ एक बात बता दूं मारने वाले जिस बहादुर क़ौम के थे, मार खाने वाले भी उसी बहादुर क़ौम के थे।

मुसलमानों को बदला लेने की इजाज़त न देने में हिक्मत

और जब बहादुर को बहादुर मारे, तो ला महाला वह बदला लेने पर आ जाता है। सहाबा किराम रज़ि० के दिल में यह बात बार-बार उठती थी कि ये हमको मार रहे हैं, हम भी इनको मारें, इनसे बदला लें, लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको बदला लेने की इजाज़त नहीं मिली—

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ الاٰية

'तुम अपना काम करते रहो और हाथ को रोक दो।' इसमें अल्लाह तआला की बहुत बड़ी मस्लहत यह थी कि जब वे मारेंगे और तुम मार खाओगे तो तुम्हारे अन्दर वह चीज़ तैयार होगी जिसके होने पर ख़ुदा की मदद नाज़िल होगी और वह चीज़ सब्र है, ईमान की ताक़त है, तक़्वा है। यह अन्दरूनी ताक़त आपके अन्दर पैदा होगी और देखो, उन लोगों को बड़ा ताज्जुब होता था, जो यह कहते थे اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ कि 'यह तो बड़ी अजीब बात है' कि ये लोग मार खा रहे हैं, फिर भी कह रहे हैं 'अल्लाह' और यह अदा अल्लाह को इतनी पसन्द आई कि एक तरफ़ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को इतना मारा कि बेहोश हो गए। मारने वाले इस इंतिज़ार में थे कि होश में आने के बाद हमारे पैर पकड़ेगा और अल्लाह को छोड़ देगा, लेकिन जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को होश आया तो ज़ुबान से क्या कहते हैं, 'अहद-अहद' (एक ही,

एक है) इन्हें तो यह अदा ताज्जुब में डाल रही है और अल्लाह को यह अदा इतनी पसन्द आ रही है कि ये लोग मुसीबतों के अन्दर अल्लाह ही को पुकार रहे हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! तक्लीफ़ की हालत में भी अल्लाह की बड़ाई को बयान किया जाए और राहत की हालत में भी अल्लाह की बड़ाई को बयान किया जाए। अगर वे अपनी माद्दी ताक़त से दुनिया को नाफ़रमानी पर लगा रहे हैं, तुम अपनी अल्लाह की ताक़त से पूरी दुनिया को फ़रमांबरदारी पर लगा दो।' ये सारी माद्दी ताक़तें अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में मकड़ी का जाला है, पूरी दुनिया में رَبَّكَ فَكَبِّرْ 'रब्ब-क फ़कब्बिर' की एक फ़िज़ा गूंज रही हो और हर जगह अल्लाह की बड़ाई बोली जा रही हो, फ्लां मौक़े पर तुम्हारी मदद नहीं की, वह ताने भी हम खाते चले जाएं और अल्लाह की बड़ाई भी बयान करते चले जाएं। हज़रत बिलाल रज़ि० मार खाते हुए भी अल्लाह की बड़ाई को बयान करते चले जा रहे हैं और हज़रत सुमैया रज़ियल्लाहु अन्हा जान दे रही हैं और जान देते हुए अपने अमल से यह साबित कर रही हैं कि मैं जान दे सकती हूं, लेकिन ईमान नहीं दे सकती।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब इस तरीक़े से अल्लाह की बड़ाई को नाहमवार माहौल में बोलते रहे, तो दिलों के अन्दर बड़ाई आ जाएगी और जब दिलों के अन्दर बड़ाई आ जाएगी और इसी का नाम ईमान की ताक़त है, फिर अल्लाह तआला आंखों से भी बड़ाई दिखाता है, अल्लाह ने बद्र के अन्दर ले जाकर आंखों से मदद को दिखा दिया, फ़रिश्तों को उतरते हुए देखा, और फ़रिश्तों

के ज़रिए अल्लाह ने मदद फ़रमाई, क्योंकि उनके अन्दर की माया तैयार हो चुकी थी।

अल्लाह गुनाह करने वाले को ढील देते हैं

इसलिए मेरी बात को याद रखना अल्लाह तआला गुनाह करने वाले को ढील देते हैं और पकड़ की एक तारीख़ मुक़र्रर कर देते हैं। जब कोई ग़लत काम करे, कोई किसी की ज़मीन दबा दे, कोई किसी पर ज़ुल्म करे, अगर अल्लाह की फ़ौरी पकड़ हो तो आदमी धोखे में न पड़े। न मालूम पकड़ की कौन-सी तारीख़ मुक़र्रर है, जब वह आ जाएगी तो आदमी बच नहीं सकेगा। हां, एक मैं उम्मीद की चीज़ बताता हूं कि कितने ही ग़लत काम हुए हों, लेकिन पकड़ की तारीख़ से पहले आदमी ने अगर तौबा कर ली, तो यक़ीन मानना, अगर पकड़ की तारीख़ भी आ गई तो अल्लाह तआला नहीं पकड़ेगा। यह ढील दे ही इसलिए रहा है कि आदमी रुजू करे। आज ख़ुदा कह रहा है, पलटा खा जा और जब आदमी पलटा खा जाता है और तौबा करता है, जब अल्लाह के रूठे बन्दे अल्लाह की तरफ़ रुजू करते हैं, तो अल्लाह तआला इतने ख़ुश होते हैं कि जिसकी कोई हद नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा मंज़र खींचते हैं इस मौक़े पर (मैं यह इस उम्मीद पर कह रहा हूं कि मैं और सारा का सारा मज्मा अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और हमसे आज तक जितने गुनाह हुए हैं, उनसे माफ़ी मांगें और यह तै करें कि आगे ऐसी ग़लती नहीं करेंगे) कि जैसे किसी देहाती का जंगल बयाबान में ऊंट गुम हो जाए और सारा खाने-पीने का सामान उसी ऊंट पर लदा हुआ था,

ऊंट गुम हो गया। उसने समझा कि मेरी मौत आ गई, ढूंढा, नहीं मिला, अपनी जगह पर आ गया और मरने के लिए लेट गया। थोड़ी देर में आंख खुली तो ऊंट मिल गया और उस पर सारा साज़ व सा़मान भी था, उसको इतनी ख़ुशी हुई कि मारे ख़ुशी के वह बात उलटी कह रहा है कि ऐ अल्लाह! मैं तेरा कितना अच्छा रब हूं और तू मेरा कितना अच्छा बन्दा है।

मेरे मोहरतम दोस्तो! रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मंज़र खींचते हैं देहाती के ख़ुश होने का और यह बात फ़रमा रहे हैं कि जो अल्लाह का रूठा बन्दा अल्लाह की तरफ़ लौट जाए तो अल्लाह उस देहाती से भी ख़ुश होते हैं जो देहाती ऊंट के मिलने पर ख़ुश होता है।

अल्लाह की ख़ुशी रूठे बन्दों से मिलने पर

और मैं एक बात समझा दूं कि जो बन्दा अल्लाह के रूठे बन्दों को अल्लाह से मिला दे, तो वे बन्दे अल्लाह के कितने महबूब बनेंगे। मुल्कों और क़ौमों में जाकर दक्खिनी अमेरिका और अफ्रीक़ा में जा़कर पैदल सफ़र करके सर्दियां और गर्मियां बरदाश्त करके कभी खेतों पर और कभी दुकानों पर जाकर और दूसरों के बुरे-भले सुनते हैं और उसकी ख़ुशामदें करके लाते हैं और उसका रुख़ अल्लाह की तरफ़ हो ग़या। जब अल्लाह उस रूठे हुए बन्दे से इतने ख़ुश होते हैं जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाए, तो उससे अल्लाह कितने ख़ुश होंगे जो अल्लाह के रूठे बन्दों को अल्लाह से जोड़ते हैं और अल्लाह से तोड़ने वालों को अल्लाह से जोड़ते हैं तो उनका मक़ाम अल्लाह के नज़दीक

कितना ऊंचा होगा। यह मालूम होगा मरने के बाद, अल्लाह तआला हमें मुहब्बत और इख़्लास के साथ इस काम में लगाए रखे।

मोहतरम दोस्तो! बात ग़ौर से सुन लो, ग़लत काम करने पर भी अगर अल्लाह की पकड़ न आए तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। शुरू में अल्लाह तआला ढील देते हैं। क़ुरआन के अन्दर सारी क़ौमों के क़िस्से बताए गए हैं, लेकिन वे क़ौमें ग़फ़लत में पड़ी रहीं और जब वक़्त आया तो तबाह व बरबाद हो गईं, अलावा यूनुस अलैहि० की क़ौम के।

यूनुस अलैहि० की क़ौम की तौबा का क़िस्सा

मगर एक क़िस्सा अल्लाह तआला ने यूनुस अलैहि० की क़ौम का ऐसा भी बताया कि ढील उन्हें भी दी गई, ये भी बहुत बड़े नाफ़रमान थे, लेकिन उस वायदे के दिन के आने से पहले थे। (क़िस्सा इनका बहुत लम्बा है।) हम सबको इस क़िस्से से बहुत उम्मीद है, चाहे हम कितने ही क़ुसूरवार हों, लेकिन अगर अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करें तो إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ। 'अलावा यूनुस की क़ौम के' वाले क़िस्से से बड़ी उम्मीद बंध जाती है। दूसरी क़ौमों के क़िस्से तो यह बताते हैं कि ढील में ग़फ़लत बढ़ी, अल्लाह की पकड़ आई, अल्लाह का अज़ाब आया, अलावा यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम के क़िस्से में कि यूनुस अलैहिस्सलाम ने उन्हें बड़ा समझाया, नहीं माने, फिर आपने उन्हें ख़बर दी कि अगर तुम तीन दिन तक न माने, तो ख़ुदा का अज़ाब आ जाएगा। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने जब हवा और बिजली चमकती हुई देखी तो बस्ती छोड़कर निकल गए। अभी उस

क़ौम पर ख़ुदा का अज़ाब आया नहीं था, लेकिन उसकी निशानियां शुरू हो गई थीं, क्योंकि अज़ाब आने के बाद हटता नहीं, अल्लाह तुम्हें और हमें महफ़ूज़ रखे, बड़ा ही डर लगता है। यह क़ौम जिस पर ख़ुदा का अज़ाब अभी आया नहीं था, लेकिन निशानियां ज़ाहिर होने लगीं, तो यह क़ौम संभल गई। उन्होंने सोचा, जिस तरह और क़ौमों पर अज़ाब आया और वे तबाह व बर्बाद हो गईं, अब हमारी तबाही व बर्बादी का वक़्त आ गया है, इसलिए हम अल्लाह से तौबा करते हैं। तौबा के लिए यूनुस अलैहि० को तलाश किया गया, मगर चूंकि वह ख़ुदा के अज़ाब की वजह से निकल चुके थे, इसलिए सारे मर्द और औरतें, बच्चों और जानवरों को लेकर बाहर निकल गए और ख़ूब गिड़गिड़ा कर और रो-रो कर दुआएं मांगीं कि 'ऐ अल्लाह! तेरे नबी यूनुस अलैहिस्सलाम को हमने नबी माना और तुझे एक ख़ुदा माना' और जो ख़राबियां उनके अन्दर थीं, उनसे तौबा की, तो मेरे मोहतरम दोस्तो! उन पर से अज़ाब टल गया।

यूनुस अलैहि० की क़ौम के इस क़िस्से से अल्लाह की रहमत की उम्मीद बंध जाती है, वरना तो डर लगा रहता है कि अपने से ग़लती हुई और ख़ुदा पकड़ नहीं रहे, कहीं यह ढील में न आ रहा हो और फिर जब पकड़ेंगे तो फिर बड़ी मुश्किल आ जाएगी, इसलिए हम अपने घर वालों और मिलने-जुलने वालों को भी समझाते रहते हैं कि कहीं पकड़ न हो जाए। हमें ग़फ़लत में नहीं रहना चाहिए। एक आदमी मेरे पास आया और कहने लगा, मौलवी साहब! एक आदमी के क़त्ल का इलज़ाम मेरे ऊपर लगा और बीस साल जेल हुई, हालांकि जिस वक़्त वह आदमी क़त्ल हुआ था, उस वक़्त मैं गांव में

था भी नहीं और देखो मुझे जेल भेज दिया गया, तो मैंने उसको कुछ नहीं कहा, लेकिन मैं समझ गया, इस वक़्त अगरचे बेगुनाह है, लेकिन इससे पहले जो मज़ालिम किए और अल्लाह ने ढील दी और ढील में आकर ग़फ़लत में पड़ा रहा, तो यह पकड़ आई। इसको भी मैं कम समझता हूं, इसलिए कि अगर ऐसी पकड़ आती, जिस पर मौत आती, तो इसके बाद आदमी के पास बचने का कोई रास्ता नहीं है। मरने से पहले-पहले आदमी कितना ही गुनाहगार हो, तौबा करके अपने गुनाहों से माफ़ी मांग सकता है।

अल्लाह का माफ़ करना दुनिया की तरह नहीं है

और जब आदमी तौबा कर लेता है, तो आने वाली बड़ी से बड़ी बला से बच जाता है। अल्लाह तआला की तरफ़ से नेमतों के दरवाज़े खुल जाते हैं और आख़िरत में आदमी बे-दाग़ हो जाता है। अरे, दुनिया के अन्दर अगर कोई जुर्म करे तो जुर्म उसकी फाइल के अन्दर रहता है और उसने माफ़ी मांग ली, तो माफ़ीनामा भी फ़ाइल के अन्दर रख दिया जाता है। पचीस साल के बाद जब जुर्मों को निकालोगे तो सारे फ़ाइल के अन्दर होंगे, माफ़ीनामा भी फाइल के अन्दर, लेकिन मेरा अल्लाह ऐसा रहीम व करीम है, ऐसा फ़ज़्ल व इनाम वाला है और ऐसी-ऐसी उम्मीदें हमने उससे जोड़ रखी हैं कि अगर सच्ची तौबा हमने कर ली, तो التَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَاذَنْبَ لَهُ 'तौबा करने वाला गुनाह से ऐसा है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं।' हांथ-पांव भूल जाएंगे, क़ियामत के दिन उसकी गवाही देने से फ़रिश्ते और ज़मीन के खरे भूल जाएंगे, गवाही नहीं देंगे। किसी क़िस्म की

ज़िल्लत और रुसवाई उस गुनाह पर नहीं होगी, जो गुनाह आदमी ने तौबा करके माफ़ करवा लिया और भाई! मैंने देखा कि जमाअतों में जब आदमी फिरता है, तो उसे अच्छा माहौल मिलता है और वहां पर तौबा की तौफ़ीक़ भी ज़्यादा मिलती है। मेरे सामने ऐसी बहुत-सी मिसालें हैं।

तौबा के दो दिलचस्प क़िस्से

1. एक शराबी-कबाबी था, रात को तहज्जुद में उठा कि ऐ अल्लाह! मैं तेरा क़ुसूरवार बन्दा हूं, तेरे नेक बन्दों के साथ आया हूं। एक मैं ही क़ुसूरवार हूं। अस्हाबे कह्फ़ सारे अच्छे थे। उनके साथ एक कुत्ता भी था, वह कुत्तर भी अच्छा बन गया। ये जमाअत वाले सारे अस्हाबे कह्फ़ हैं और मैं कुत्ते जैसा उनके साथ लग गया। ऐ अल्लाह! तू मेरी ग़लतियों को माफ़ कर दे, आगे कभी नहीं करूंगा। वह ऐसा रोता था कि साहब! मेरा भी दिल नर्म पड़ गया और मैं चुपके से उसके पीछे बैठ गया। उसे मालूम न था, क्योंकि रात का अंधेरा था और वह अपने मौला के सामने गिड़गिड़ा रहा था। हमीं लोग उसे गश्त में से लाए थे, लेकिन भाई! जितना आदमी अंधेरे में से आता है, थोड़ा-सा उसे इशारा मिल जाए, तो उसकी क़द्र करता है। वह बहुत रोया और मैं भी उसके पीछे रोया। मैंने कहा, ऐ अल्लाह! कितना भी गुनाहगार है, पर है तेरा बन्दा, लेकिन इस वक़्त तेरे दरबार में तौबा करते हुए आया है। रात के तीन बजे थे, और उस वक़्त रात के आख़िरी हिस्से में अल्लाह आसमाने दुनिया में नुज़ूल फ़रमाते हैं, (अपनी शान के मुनासिब) और एलान होता है कि

है कोई मुझसे मांगने वाला कि मैं उसको दूं और है कोई तौबा करने वाला कि मैं उसकी तौबा को क़ुबूल करूं।

2. एक दूसरे को मैंने सुना। वह ताइफ़ में मक्का से गया था। वह भी बेचारा नशेड़ी था। वह यों कह रहा था, ऐ अल्लाह! ये जितने लोग हैं, इनको उमरे का सहारा, इनको हज का सहारा, और किसी को ज़िक्र का सहारा, किसी को इल्म का सहारा, किसी को तब्लीग़ का सहारा, किसी को नमाज़ का सहारा और ऐ अल्लाह! मैं ही एक बे-सहारा हूं। वह बेचारा असल में ढोल बाजा बजाने वाला था, जिसे हमारी ज़ुबान में हिजड़ा कहते हैं, लेकिन वह मर्दों जैसे कपड़े पहने हुए था। वह यों कहता था कि मेरा ज़िक्र क्या? मेरा उमरा व हज क्या? ये तो उन लोगों के हैं जो आए हुए हैं, इनके पास सारे आमाल के सहारे हैं और ऐ अल्लाह! एक मैं ही बे-सहारा हूं और तू बे-सहारों का सहारा है। ऐ अल्लाह! तू मेरा सहारा बन और मेरी ग़लतियों को माफ़ कर दे और यह तो हदीस में भी आता है, يَا عِمَادَ مَنْ لَا عِمَادَ لَهُ 'ऐ बे-सहारों के सहारे! तू हमारा सहारा बन जा।' सारा मज्मा यह बात ज़ेहन में बिठा ले कि मरने से पहले-पहले मौक़ा है हमारे लिए अल्लाह की तरफ़ रुजू करने का और यह जो दावत की फ़िज़ा है, इस फ़िज़ा में एक तो आदमी ख़ाली ज़ुबान से कहता है, 'या अल्लाह! मेरी तौबा!' यह तौबा का बोल है, तौबा नहीं है ताला खोलने के लिए आदमी ज़ुबान से कहे, 'कुंजी' तो ताला नहीं खुलता, जब तक कि कुंजी लाकर उसे लगाए नहीं।

तौबा के लिए चार शर्तें

जिस तौबा से गुनाह माफ़ होते हैं, उसमें चार बातें ज़रूरी हैं—

1. एक तो यह कि आदमी को सही नदामत और शर्मिन्दगी हो कि ऐ अल्लाह! मैं तेरा क़ुसूरवार बन्दा हूं,
2. दूसरे यह कि जिस वक़्त तौबा कर रहा है, उस वक़्त गुनाह न कर रहा हो,
3. तीसरे यह कि आगे के बारे में यह वायदा करे कि मैं गुनाह नहीं करूंगा,
4. चौथे यह कि जो गुनाह हो चुका हो, उसकी तलाफ़ी, जितनी शरीअत में चाहिए, करे, नमाज़ें रह गई हों तो पढ़े, रोज़े रह गए हों, तो रखे, दस साल हुए, हज फ़र्ज़ हुए, नहीं किया, तो अब करे, ज़कात पांच साल से नहीं दी, तो अब दे दे। ग़रज़ यह कि बन्दों के हक़ जितने हैं, वह अदा करे।

अगर इस तरीक़े से तौबा करेगा, तो याद रखना, जैसे मां के पेट से अभी निकला हो, बिल्कुल पाक-साफ़ और अगर दोबारा गुनाह भी हो जाए तो माफ़ी मांग ले।

नाफ़रमानियों के साथ माल व दौलत का मिलना बरकत नहीं कहलाता

मैं जो बात कह रहा था, वह बीच में न रह जाए। कभी-कभी दुनिया के अन्दर अल्लाह तआला इम्तिहान लेते हैं। नाफ़रमानियों के बावजूद अगर दुनिया का साज़ व सामान मिले, तो यह बरकत नहीं है, बल्कि मोहलत है, यानी ख़ुदा का क़हर है, मेहरबानी की शक्ल में यह ज़हर है। एक आदमी ने कहा कि मेरी दुकान में बहुत बरकत है, मैंने कहा कि नाफ़रमानी तो नहीं है, उसने कहा, नाफ़रमानी के

बग़ैर दुकान चल नहीं सकती। मैंने कहा, नाफ़रमानियों के साथ तो बरकत हो नहीं सकती। उसने कहा, मेरी तो हो रही है, मैंने कहा, वह क्या हो रही है। उसने कहा, आमदनी बहुत हो रही है। मैंने कहा, देख आमदनी का बहुत होना बरकत नहीं है। आमदनी तो क़ारून की भी बहुत थी, नाफ़रमानियों के साथ आमदनी का होना उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक आदमी जिसको फ़ाइज़ेरिया की बीमारी हो, इस बीमारी में बदन पर वरम आ जाता है, बदन सूज जाता है, सूज कर मोटा हो जाता है, अब यह फ़ाइज़ेरिया की बीमारी वाला यह कहे कि मैं पहलवान हो गया, अरे भाई! वह कैसे? उसने कहा, वह देखो, पहलवान का बदन मोटा और मेरा भी मोटा।

देखो फ़रमांबरदार हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास भी माल और सामान बहुत था और क़ारून और फ़िरऔन के पास भी माल व दौलत बहुत थी।

अरे भाई! क़ारून व फ़िरऔन के पास माल व दौलत नाफ़रमानियों के साथ थी और सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास फरमांबरदारियों के साथ थी। फ़रमांबरदार को अगर अल्लाह माल व दौलत दे, तो वह ऐसा है जैसा पहलवान और अगर नाफ़रमान को अल्लाह माल व दौलत दे तो वह ऐसा है जैसे फ़ाइज़ेरिया की बीमारी वाला। उसे आप समझाएंगे कि भाई! तेरा बदन है वरमीला और पहलवान का बदन है गठीला। फ़रमांबरदारी के साथ मिलने वाली नेमतें ऐसी हैं, जैसे गठीला बदन और नाफ़रमानी के साथ मिलने वाला साज़ व सामान ऐसा है जैसे वरमीला बदन।

फ़रमांबरदार और नाफ़रमान पर तक्लीफ़ का फ़र्क़

इसके मुक़ाबले में फ़रमांबरदार पर कभी-कभी तक्लीफ़ आती है और नाफ़रमान पर भी कभी-कभी तक्लीफ़ आती है। नाफ़रमान पर जो तक्लीफ़ आती है, वह आती है अज़ाब के तौर पर और फ़रमांबरदार पर जो तक्लीफ़ आती है वह आती है आज़माइश के तौर पर। क़ुरआन पाक में जहां पर फ़रमांबरदारों पर तक्लीफ़ों का ज़िक्र है, वहां पर आप देखो 'इब्तिला' (आज़माइश) या इसके क़रीब-क़रीब कोई लफ़्ज़ मिलेगा। हज़रत इब्राहीम अलैहि० के बारे में وَاِذِ ابْتَلٰى اِبْرَاهِيْمَ رَبُّهٗ इब्तिला इस्तेमाल हुआ है, इसी तरह उहुद लड़ाई के बारे में هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ और खंदक़ के बारे में जो ज़िक्र हुआ, لِيَبْتَلِيَكُمْ उसमें इब्तिला लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है और आम मुसलमानों के बारे में وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ 'हम ज़रूर-ब-ज़रूर तुमको आज़माएंगे' कहा गया है, इसमें भी लफ़्ज़ 'इब्तिला' है।

और नाफ़रमानी के साथ जो तक्लीफ़ें आती हैं, वह होता है अज़ाब।

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

मस्लहत अल्लाह की यह होती है कि बड़ा अज़ाब जो आने वाला है, उससे पहले-पहले आदमी अल्लाह की तरफ़ रुजू कर ले, क्योंकि आज अल्लाह तुझे कहता है कि पलटा खा जा। अगर तूने पलटा न खाया तो मरने के बाद तू कहेगा कि अल्लाह पलटा खिला दे, तो अल्लाह पलटा नहीं खिलाएगा। इस दुनिया में थोड़ी-थोड़ी मुसीबतें डालकर अल्लाह तुझे कहता है कि वापस हो जा,

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ 'जिन लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ' वाला रास्ता छोड़ दे और اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ 'जिन पर अल्लाह का इनाम हुआ' वाले रास्ते पर आ जा और गुमराहों का रास्ता छोड़ दे और 'सीधे वाले' रास्ते पर आ जा, फ़रमांबरदारी के साथ तक्लीफ़ का अंजाम ख़ुदा की रहमत है और नाफ़रमानी के साथ तक्लीफ़ों पर अगर तौबा न की, तो फिर उसका अंजाम तक्लीफ़ों का बढ़ जाना है और दोनों तक्लीफ़ों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। एक आदमी ने गुस्से के अन्दर छुरा मारा और छुरा उसने ज़हर में डुबो कर मारा, जिससे पूरे जिस्म में फोड़े-फोड़े हो गए, ज़ख़्म हो गया। अब यह आदमी डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने कहा, पूरे बदन में ज़हर चला गया है। उसके इलाज पर दो हज़ार रुपए लगेंगे, पन्द्रह इंजेक्शन लगाऊंगा और चालीस दिन तक कड़वी दवा पीनी पड़ेगी और बदमज़ा खाना खाना पड़ेगा और ये जितने ज़हर के फोड़े हैं, इन सबका आपरेशन होगा और तुम यहीं रहोगे और ठीक हो जाओगे। अब यह डाक्टर उसका आपरेशन कर रहा है, कड़वी दवा भी पिला रहा है, इंजेक्शन भी लगा रहा है। एक तो उस आदमी ने छुरा मारा जिसने ज़ख़्मी किया और दूसरा डाक्टर छुरी मार रहा है, तो यह डाक्टर से यों कहे कि, 'डाक्टर साहब! हम तो आए थे आपके पास आराम के लिए आप भी हमें उसी तरह छुरा मार रहे हैं। नहीं भाई! गुस्से वाला छुरा तो मार डालने के लिए था और आपरेशन वाला तो तन्दुरुस्ती के लिए है। नाफ़रमानी के साथ जो तक्लीफ़ आती है वह है आदमी को ज़हर के छुरे की तरह परेशान करने वाली और फ़रमांबरदारी के साथ जो तक्लीफ़ आती है, वह है आपरेशन का छुरा जो आगे जाकर

ठीक हो जाएगा, इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं–

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ۔

'ज़रूर-ब-ज़रूर, हम तुमको आज़माएंगे ठोंक बजाकर देखेंगे कभी उन पर ख़ौफ़, कभी भूख, कभी माल की कमी, कभी जान की कमी, कभी फलों की कमी।' और आगे फ़रमाते हैं–

وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ الَّذِيْنَ اِذَا اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

'सब्र करने वालों को, झेलने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि जब उन पर तक्लीफ़ आती है, वे कहते हैं اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' (यानी हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर हमें लौट कर जाना है।)'

अगर हमारा माल लूटा गया, तो वह भी अल्लाह की तरफ़ चला गया। अगर दुकान को आग लगाई गई, तो वह भी अल्लाह की ओर चली गई और अगर रिश्तेदारों को मार डाला तो वे भी अल्लाह की ओर चले गए और मुझे भी अल्लाह की तरफ़ जाना है और अल्लाह ही उसका बदला देगा। अल्लाह पाक इन चीज़ों का क्या अंजाम फ़रमाते हैं–

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

'उन पर अल्लाह की ख़ुसूसी रहमतें नाज़िल होंगी और वही लोग कामियाब हैं।'

मुसलमानों की तक्लीफ़ों पर बेदीनी का फैलना

इसलिए मेरे मोहतरम दोस्तो! तक्लीफ़ तो उस मुसलमान को उठानी है। तक्लीफ़ें तो सहाबा किराम रज़ि० ने भी उठाईं और तक्लीफ़ें आज भी उम्मत उठा रही है, लेकिन आज उम्मत की परेशानियां बढ़ रही हैं और बेदीनी फैल रही है और सहाबा रज़ि० की तक्लीफ़ें उठाने पर अल्लाह की रहमतें नाज़िल हुईं और ईमान दुनिया के अन्दर फैला और इतना फैला कि उस वक़्त तो रिश्तेदार भी मानने को तैयार न थे, लेकिन इन तक्लीफ़ों का यह नतीजा निकला कि लाखों की तायदाद में यहां पर बैठे हैं और करोड़ों की तायदाद में पूरे आलम के अन्दर फैले हुए हैं और उत्बा और शैबा जो रिश्तेदारों में से भी हैं, वह तो मुक़ाबला कर रहे हैं और शुक्र है अल्लाह तआला का और हमारी सआदतमंदी और ख़ुशनसीबी है अल्लाह जल्ल जलालुहू की तरफ़ से कि बावजूद इसके कि हम नबी अलैहिस्सलाम से हज़ारों मील दूर 1400 साल के फ़ासले पर हैं, लेकिन जब हमारी आंख खुलती है, हमारी ज़ुबान पर—

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०' जारी हो जाता है, यह नतीजा है इन तक्लीफ़ों का। आज उम्मत जो तक्लीफ़ें उठा रही है, इन तक्लीफ़ों की वजह से दह्रियत फैल रही है, बलाएं और ज़्यादा बढ़ रही हैं।

यह बात ग़ौर से समझ लो कि आज की तक्लीफ़ें तो अल्लाह के अह्काम तोड़ने की वजह से आ रही हैं, पूरे आलम के अन्दर से दीनदारी

निकल गयी है, जिसके बारे में हुज़ूर सल्ल० यह फ़रमाते हैं—

اِذَا تَبَايَعْتُمْ بِالذَّرْعِ وَاَخَذْتُمْ اَذْنَابَ الْبَقَرِ وَرَضِيْتُمْ بِالزَّرْعِ وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ سَلَّطَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الذِّلَّةَ لَا يَنْزِعُهُ حَتّٰى تَرْجِعُوْا اِلٰى دِيْنِكُمْ.

'जब तुम्हारी तिजारतें ग़लत हो जाएं और जब तुम बैलों की दुमों को पकड़ने लगो और जब तुम खेतों पर राज़ी हो जाओ और जब तुम अल्लाह के दीन के लिए जद्दोजेहद छोड़ दो, तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह तआला ज़िल्लत मुसल्लत कर देगा और वह ज़िल्लत उस वक़्त तक नहीं हटेगी जब तक तुम अपने दीन पर न आ जाओ, यानी दीन की मेहनत पर न आ जाओ।

मुसलमानों की मक्का की फ़त्ह के लिए रवानगी

मेरे मोहतरम दोस्तो! सहाबा किराम ने दावत का काम किया और उसके लिए तरह-तरह की तक्लीफ़ें उठाईं, तक्लीफ़ें उठाकर अल्लाह से दुआएं मांगीं। अल्लाह ने वह दिन दिखाया कि रसूले करीम दस हज़ार का मज्मा लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हुए, क्योंकि हुदैबिया की सुलह का जो समझौता था, उसे मुश्रिकों ने तोड़ दिया था। मक्का के जितने बेईमान और काफ़िर मुश्रिक थे, वे ख़ूब डरे। उन्होंने सोचा, 13 साल मक्का मुकर्रमा के और 8 साल मदीना के 21 साल की भड़ास मुसलमान आज निकालेंगे और हमें ख़ूब क़त्ल करेंगे और हमारी बोटियां नोचेंगे।

मुश्रिकों की तरफ़ से अबू सुफ़ियान ने दो और आदमी अपने साथ लिए और जासूसी के लिए निकले। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु

अन्हु ने अबू सुफ़ियान को पकड़ लिया। एक ख़ेमे में उनका ज़ेहन बनाया और इस्लाम पर आमादा करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाए। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अबू सुफ़ियान! अभी तक तेरी समझ में यह बात नहीं आई कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, तो अबू सुफ़ियान ने यों कहा, कि अगर अल्लाह के अलावा कोई और माबूद होता तो बद्र और दूसरे मार्कों में हमारी मदद करता। अब तो हमें हालात ने यह बता दिया कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है, इतनी बात तो हमारी समझ में आ गई। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अबू सुफ़ियान! अभी तक तेरी समझ में नहीं आया कि मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूं। तो अबू सुफ़ियान ने कहा कि यह बात अभी तक दिल में नहीं उतर रही, क्योंकि शुरू से ये लोग रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में अलग-अलग क़िस्म की बातें करते आए थे, जैसे तुम्हारे जो दादाओं के दादा हैं (लुई), तुम जो कहते हो कि मरने के बाद वह ज़िंदा होगा तो मरने के बाद कैसे ज़िंदा होगा, तुम उन्हें ज़िंदा करके दिखाओ। वह ज़िंदा होकर तुम्हारी नुबूवत की गवाही दे दें तो फिर हम मान लेंगे।

इंसान मरने के बाद कैसे ज़िंदा होगा?

मरने के बाद ज़िंदा होना उसको मैंने बीच में छोड़ दिया तो अब सुनो कि सवा पांच फिट का इंसान मां के पेट में से आया, तो सवा बालिश्त का था और मां के पेट में कुछ उंगली का और इससे पहले

मनी के क़तरे में और उससे पहले यह इंसान ग़िज़ा के अन्दर फैला हुआ था, क्योंकि ग़िज़ा से मनी बन जाती है और ग़िज़ा से पहले यह हुआ कि लहरों में, सूरज की किरनों में, बारिश के क़तरों में, चांद की रोशनी में, सितारों की तासीर में, ज़मीन के ज़र्रों में, खाद की गन्दगी में बिखरा हुआ था। इस बिखरे हुए इंसान को अल्लाह ने समेटा, अनाज की शक्ल दे दी। मर्द व औरत ने खाया तो मनी की शक्ल दे दी। दोनों मिले तो इंसान की शक्ल दे दी, हालांकि सूरज करोड़ों मील दूर और चांद लाखों मील दूर। जब इंसान मरा और तीन बाई सात फ़िट की क़ब्र के अन्दर उसके ज़र्रे सिमट गए तो जो अल्लाह करोड़ों और लाखों मील से ज़र्रों को जमा करके इंसान बना सकता है, क्या वह अल्लाह उसके ज़र्रों को मिलाकर दोबारा उसे क़ियामत में ज़िंदा नहीं कर सकेगा? ज़रूर करेगा और पूरा हिसाब लेगा और आगे जन्नत और जहन्नम के मंज़र आएंगे। यह बात रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते, तो वे कहते थे कि अपने दादा को ज़िंदा करके दिखाओ। वे आपकी रिसालत का कहें तो हम मान सकते हैं। इतनी तेज़ मुख़ालफ़त की, लेकिन जब फ़ातेह की शक्ल में दाख़िल हुए तो अबू सुफ़ियान यहां पर आकर अटक गया कि आपको अल्लाह का रसूल मानने के लिए मेरा दिल अभी तक नहीं माना।

अबू सुफ़ियान का इस्लाम

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अबू सुफ़ियान को फिर तंहाई में ले गए और कहा कि जब तक तू हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल नहीं मानेगा उस वक़्त

तक तू मुसलमान नहीं हो सकता और तेरी निजात नहीं हो सकती। चुनांचे उसने उसे भी मान लिया। हज़रत अब्बास रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कान में यों कहा कि अल्लाह के नबी! यह चौधरी है और चौधरी इक्राम चाहा करते हैं। आप इसका ज़रा इक्राम कर दीजिए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़ियान से यों कहा कि अबू सुफ़ियान! जो आदमी तेरे घर में दाख़िल हो जाए, उसे अम्न है। अबू सुफ़ियान भी चौधरी आदमी था और अब तो अबू सुफ़ियान सहाबी रज़ि० थे। उन्होंने कहा, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप तो बड़े आदमी हैं और अम्न इतना छोटा, मेरा घर तो छोटा-सा है, आप थोड़े आदमियों को अम्न दे रहे हैं। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यों फ़रमाया कि जो आदमी मस्जिदे हराम में दाखिल हो, उसे भी अम्न है। अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, अब भी कम लोगों को आप अम्न दे रहे हैं। आपकी शान तो बहुत बड़ी है। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'जो अपने घर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर ले, उसे भी अम्न है, तो अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, वाह, वाह! वाह, वाह! यह आपकी शान के मुनासिब अम्न है, अब तो बहुतों को अम्न मिल गया। फिर अबू सुफ़ियान रज़ि० मक्के में दाख़िल हुए और नवजवानों को जमा किया और यह कहा कि देखो, रात के अंधेरे में जिनको निकाला था, अब दिन के उजाले में दस हज़ार के साथ आ रहे हैं, लेकिन इतने अख़्लाक़ वाले हैं कि उनसे जो अम्न मांगता है, अम्न दे देते हैं, तो तुम सारे जाकर अम्न ले लो।

अबू सुफ़ियान की बीवी की मुख़ालफ़त

अबू सुफ़ियान की बीवी मुसलमानों के बहुत सख़्त ख़िलाफ़ थीं, बाद में मुसलमान हो गईं, उस दिन तो ख़िलाफ़ ही थीं। हिन्दा ने उन नवजवानों से यों कहा कि इस अबू सुफ़ियान की बात मत मानो, बल्कि इसको क़त्ल कर दो, भला उनसे हम कैसे अम्न मांग सकते हैं, जिनके साथ हमारी 21 साल तक लड़ाई रही हो? हम बिल्कुल अम्न नहीं मांगते। अबू सुफ़ियान रज़ि० ने कहा, देखो, इस औरत की बात में बिल्कुल मत आइयो। यह औरत सबको मरवा देगी। यही वह हिन्दा है जिसने हज़रत हमज़ा रज़ि० के मुबारक बदन को चीरा, नाक-कान को काटा, गले का हार बनाया और पेट को चीर कर अन्दर से कलेजा निकाला।

हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़म

और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब बद्र के शहीदों का मुआयना फ़रमाया और देखा कि मदीना मुनव्वरा के घर-घर में शहीदों के लिए रोने की आवाज़ आ रही है, क्योंकि वहां पर किसी का भाई शहीद है और किसी दूसरे का बेटा शहीद है। आप मुआयना फ़रमाते हुए हज़रत हमज़ा रजि० की लाश के पास पहुंचे और जब नाक और कान कटे हुए और पेट कटा हुआ और कलेजा निकला हुआ देखा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल भर आया, सीना भर आया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान से एक जुम्ला निकला—"وَحَمْزَةُ لَا بَوَاكِيَ لَهُ"

'ये जितने शुहदा यहां पड़े हुए हैं, इनके लिए मदीना मुनव्वरा में रोने वालियां मौजूद हैं और मेरा हमज़ा परदेस के अन्दर इस हालत में पड़ा हुआ है कि उसके लिए कोई रोने वाला नहीं है।

मदीना मुनव्वरा की औरतों तक जब यह बात पहुंची तो वे घरों से निकल आई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह बात अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हज़रत हमज़ा रज़ि० के लिए रोने वालियां मदीना मुनव्वरा की सारी अंसार औरतें हैं। (नौहा उस वक़्त तक हराम नहीं हुआ था।) हम सारी की सारी औरतें हज़रत हमज़ा रज़ि० के लिए रोने वालियां हैं। यह मंज़र सारा हिन्दा की वजह से हुआ था। यह हिन्दा आज भी बहुत सख़्त, लेकिन एक दिन गुज़रा, हिन्दा दौड़ी हुई जा रही थी। पूछा, कहां जा रही हो? यह हिन्दा, उत्बा की बेटी, हज़रत मुआविया रज़ि० की मां, अबू सुफ़ियान की बीवी और यज़ीद की दादी और रबीआ की पोती, ये सारे इसी सिलसिले में हैं। उसने कहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जा रही हूं और वहां जाकर मुसलमान हूंगी और बैअत ओ जाऊंगी। पूछा गया, कल तक तो इतनी सख़्त थीं, आज कैसे इतनी नर्म हो गईं?

अख़्लाक़ व इबादत से कट्टर दुश्मन मोम

उसने कहा, उनकी इबादत और अख़्लाक़ ने मुझ पर असर किया। दावत ने इतने ऊंचे अख़्लाक़ तक पहुंचा दिया कि जिस मक्का मुकर्रमा में इतने मज़ालिम हुए, उस मक्का में जब फ़ातेह के तौर पर दाख़िल हुए, तो अन्दर का जज़्बा बदला लेने का नहीं था,

बल्कि अन्दर का जज़्बा यह था कि किसी सूरत से उनको हिदायत मिल जाए और जहन्नम वाले रास्ते से हट जाएं और जन्नत में चले जाएं, कोई बदला नहीं लेना हमको।

हज़रत ख़ालिद उमरतुल क़ज़ा में इससे मुतास्सिर हुए कि मैंने उहुद वाला सारा मंज़र क़ायम किया था और आज जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह कह रहे हैं कि ख़ालिद इतना समझदार है, उसे अब तक समझ में नहीं आया। जब यह बात हज़रत ख़ालिद के कान में पड़ी, तो उनका दिल भी नर्म हुआ और मदीना मुनव्वरा पहुंच कर इस्लाम क़ुबूल किया और सारे मदीने वालों ने उनका इस्तक़बाल किया। हिन्दा ने कहा, मेरा दिल तो यह कहता था कि ख़ूब गाने होंगे, क्योंकि मक्का फ़त्ह हुआ है और बाजे बजाए जाएंगे और मर्दों को क़त्ल किया जाएगा। मक्का मुकर्रमा में ख़ून की लाशें तड़प रही होंगी और औरतों की आबरूएं लूटी जा रही होंगी। आज तो मक्का में सब कुछ होगा और मुसलमान 21 साल की भड़ास निकालेंगे, क्योंकि जो मज़ालिम मुसलमानों पर किए गए थे, वे उसे भूल नहीं सकते थे। मज़्लूम भी उसे भूल नहीं सकता और ज़ालिम भी उसे भूल नहीं सकता।

मक्का में मुसलमानों पर मज़ालिम

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० का दर्जा सुप्रीम कोर्ट के जज का था। वह हरम काबा में बैठकर फ़ैसला सुनाया करते थे, लेकिन जब वे मुसलमान हुए और दावत के लिए खड़े हुए तो हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० को जूते सर पर और चेहरे पर मारे गए। यही वह मक्का था जहां पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर थूका

करते थे और आपकी पीठ पर ओझड़ी, मिट्टी डाला करते थे। यही वह मक्का मुकर्रमा है, जहां पर आपकी दोनों साहबज़ादियों को तलाक़ हुई और यहीं पर हज़रत जैनब रज़ि०, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी साहबज़ादी थीं, और जब हिजरत के लिए मदीना रवाना हुईं, तो आपको हमल की हालत में बरछा मारा गया और ज़ख़्मी हो गईं, इस हालत में मदीना मुनव्वरा पहुंचीं और इंतिक़ाल हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दफ़न के लिए क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए। आपके चेहरे पर ग़म था, जब दफ़न करके बाहर तशरीफ़ लाए, तो ख़ुश थे। लोगों के पूछने पर आपने फ़रमाया कि मुझे डर था कि कहीं मेरी बेटी को क़ब्र का अज़ाब न हो जाए, तो मैंने अल्लाह से दुआ मांगी। अल्लाह की तरफ़ से यह इत्तिला दी गई कि तेरी बेटी को अज़ाब नहीं होगा। अज़ाब के डर की वजह से जो ग़म था, जब मुझे मालूम हुआ कि अज़ाब नहीं होगा, तो मेरे चेहरे पर ख़ुशी आई, तो हिन्दा यह कह रही थी कि सारे मंज़र हमारे सामने थे, इस वजह से आज हमारी बोटियां नोच ली जाएंगी, लेकिन कल आधी रात तक मैं इन्तिज़ार करती रही। जब मैंने दरवाज़ा खोला, तो पूरे मक्के में अंधेरा था। मैं हैरत में पड़ गई कि या अल्लाह! यह कैसी फ़त्ह! इन मुसलमानों के दिलों में कोई ख़ुशी नहीं मक्का फ़त्ह करने की। चारों तरफ़ देखूं, दस हज़ार का मज्मा किधर गया, चारों तरफ़ तलाश किया, नहीं मिले, तो मस्जिद हराम में गई तो मैंने देखा कि यह सारे का सारा दस हज़ार का मज्मा हरम शरीफ़ के अन्दर अल्लाह की इबादत में लगा हुआ है और अल्लाह के सामने दुआएं मांग रहा है और यह हम क़ुरैश वालों के लिए हिदायत मांगने में लगा

हुआ है। अरे, हम तो इनको मौत के घाट उतारने के पीछे पड़े हुए थे और यह हमको जन्नत में पहुंचाने के लिए पीछे पड़ा हुआ है। मेरा दिल पसीज गया और आज रात जितनी इबादत मस्जिदे हराम में हुई है, उतनी इबादत मैंने कभी नहीं देखी।

हिन्दा का इस्लाम क़ुबूल कर लेना

अब मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैअत होने के लिए जा रही हूं और जाकर बैअत की। बैअत होने के बाद हिन्दा ने हुज़ूर सल्ल० से यों कहा कि कल यही वक़्त था, मक्का के बाहर दस हज़ार का मज्मा बैठा हुआ था, सबके ख़ेमे लगे हुए थे और सबके बीच में आपका ख़ेमा था और सबसे ज़्यादा मबग़ूज़ (जिस पर ग़ज़ब नाज़िल हो) मुझे आपका ख़ेमा नज़र आ रहा था और आज मैं देख रही हूं कि मक्का मुकर्रमा में सबके बीच आपका ख़ेमा है और मेरे दिल में सबसे प्यारा ख़ेमा आपका है। मेरी निगाह बदल गई, मेरा दिल बदल गया।

मेरे मोहतरम दोस्तो! इस दावत ने उस ऊंचे मक़ाम तक पहुंचाया। दावत वाली ज़मीन हो, ईमानियात वाली जड़ हो और उसके साथ में इबादत का तना हो और उसके साथ दीन का दरख़्त हो और अख़्लाक़ का फल हो और इख़्लास का रस हो, तो पूरे आलम के अन्दर अल्लाह का दीन फैल सकता है, लेकिन शुरूआत दावत से होगी और इंतिहा अख़्लाक़ और इख़्लास पर होगी। यह शुरूआत हमें इस इंतिहा तक पहुंचा दे।

आम माफ़ी का एलान

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दस हज़ार के मज्मे को लेकर मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो पहले आप बैतुल्लाह में दाख़िल हुए, सारा मज्मा बाहर था और कुफ़्फ़ार भी बाहर थे। बहुत देर तक आपने ख़ुदा की इबादत की, राज़ व नियाज़ की जो बातें करना थीं, वह कीं। फिर आप बाहर तशरीफ़ लाए। सारे मुश्रिक सहमे हुए थे कि एक इशारे पर हमारे गले कट जाएंगे। आपने पूछा, बताओ, मेरे बारे में तुम्हारे क्या ख़्याल हैं? उन्होंने कहा कि आप करीम हैं और करीम से करम की उम्मीद है, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम उन्होंने अपने भाइयों से जो बात कही थी, (वही मैं कह रहा हूं) कि मेरी तरफ़ से तुम्हें कोई लानत-मलामत नहीं। अरे! मेरे साथ तुमने जो कुछ भी किया हो, तुम मेरी तरफ़ से आज़ाद हो। किसी को दो महीने किसी को तीन महीने का अम्न दे दिया गया।

इसके बाद फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए और हज़रत अब्बास रज़ि० से कहा कि अबू लहब के दो बेटे कहां गए? मेरे चचाज़ाद भाई कहां गए? हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, भाग गए होंगे। आपने फ़रमाया, नहीं, लेकर आओ। हज़रत अब्बास रज़ि० उन्हें ढूंढ कर लाए—एक उत्बा और एक मोतब और एक को किसी जानवर ने सफ़र में खा लिया था। अब ये दो ही बाक़ी रह गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों को दावत दी। उनके दिल पसीज गए। वे दोनों के दोनों मुसलमान हो

गए। फिर हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दोनों भाइयों को लेकर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गए और वहां पर जाकर बहुत दुआ मांगी और उसके बाद बाहर तशरीफ़ लाए। हज़रत अब्बास रज़ि० ने आपका चेहरा अन्वर देखा और पूछा कि हज़रत! आपका चेहरा बहुत ख़ुश है, क्या बात है? यों फ़रमाया, मैंने अपने चचा के दो बेटे ख़ुदा से मांगे थे, ख़ुदा ने मुझे वे दे दिए, उसकी ख़ुशी से मेरा चेहरा चमक रहा है।

मैं ये सारे वाक़िए सुनाकर यह नतीजा निकालता हूं कि मेरे मोहतरम दोस्तो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ने दावत के लिए इतनी तक्लीफ़ें उठाकर यह जो अख़्लाक़ बरते, उस अख़्लाक़ ने इतने कट्टर और ज़बरदस्त दुश्मनों को पलटा खिला दिया और आज हमें भी दावत से शुरू करना है और अख़्लाक़ तक पहुंचना है और पूरे आलम के अन्दर फिरना है। जो तक्लीफ़ें आएंगी, उन्हें बरदाश्त करना है, जो राहतें मिलें उसे अल्लाह की नेमत समझना है। यह सिर्फ़ चार महीने या दो साल की बात नहीं, बल्कि हम आए ही इस दुनिया में दीन के काम के लिए हैं, हम खाने-कमाने के लिए नहीं आए हैं। (खाना और कमाना ज़रूरत की चीज़ है, इसे कम करके ज़रूरत के मुताबिक़ उसमें लगना है और अल्लाह के दीन की मेहनत और दावत में अपना पूरा माल और पूरी जान लगा देना है। जिसके हाथों जितने इंसानों को हिदायत मिलती चली जाएगी, उस पर उन्हें जितनी जन्नत मिलेगी, उन सबके बक़द्र उस अकेले को मिलेगी। अल्लाह के दीन का काम करते करते अगर जान दे दी, तो

जितने आदमी दीन पर आएंगे, उन सबका सवाब उसे क़ब्र में भी मिलता रहेगा। आदमी लाख फ़र्ज़ नमाज़ों का सवाब भी क़ब्र में जाकर लेगा, जिस क़ब्र में जाकर उसे एक फ़र्ज़ नमाज़ का सवाब भी नहीं मिल सकता।

इस वजह से आप लोग आज की तारीख़ में यह तै करें कि तक्लीफ़ें तो यों भी उठा रहे हैं, जिस पर दुनिया में बेचैनी फैल रही है और सैलाब आ रहे हैं, लेकिन मोहतरम दोस्तो! कई साल हो गए, अल्लाह ने मदद फ़रमाई और सैलाबों से हिफ़ाज़त होने लगी। ये ख़ुदा की नेमतें हैं। इन नेमतों की क़द्र करना चाहिए और इस नेमत को पूरी दुनिया में पहुंचाना चाहिए।

एक मराकशी की बेचैनी

इस नेमत को लेकर जब हम मराकश (मोरक्को) गए तो एक मराकशी ने मेरा दामन पकड़ा और चीख़ें मारकर रोया और यों कहा, कि ऐ एशिया के मुसलमानो! तुम क़ियामत के दिन ख़ुदा को क्या जवाब दोगे? तुम्हारा दामन होगा और हमारा हाथ होगा। हम ख़ुदा से शिकायत करेंगे कि चालीस साल से दीन का काम उनके पास पहुंचा, लेकिन ये हमारे पास लेकर नहीं आए। हमारे बाप-दादा, जो बेदीनी की हालत में मर गए, अरे! उनका क्या हाल होगा? किस क़दर बेहाल होकर वह चीख़ें मार-मारकर रोता था।

मेरे मोहतरम दोस्तो! आज कितनी तायदाद में लोग बग़ैर ईमान के मर-मर के क़ब्रों में जा रहे हैं, अरे! इनके पहले-पहले यह मज्मा पूरी दुनिया में फैल जाए और जाकर उनकी ख़ुशामदें करके दावत की

फ़िज़ा को क़ायम करे, ताकि लोग मरने से पहले तौबा करके ईमान वाली ज़िंदगी पर आ जाएं।

Maktab Ashraf
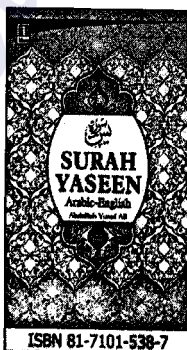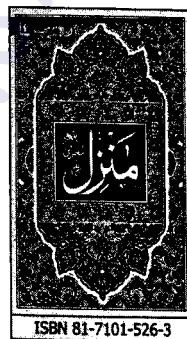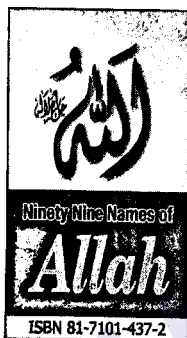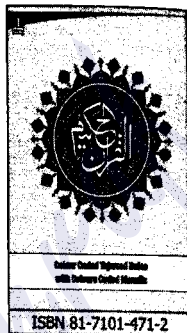
आज भी और हमेशा से हर इंसान अपनी कामियाबी के लिए हाथ पैर मारता आया है, लेकिन क्या हर आदमी कामियाबी को पा लेता है? हरगिज नहीं।

क्यों? इसलिए कि अक्सर लोग न तो यह जानते हैं कि "कामियाबी" किस चीज का नाम है? और न यह जानते हैं कि वह हासिल किस तरह होगी?

यह किताब हमें कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ के ज़रिए यह बात बताती है कि कामियाबी इस चीज का नाम है, और वह इस इस तरीक़े से हासिल हो सकती है।

Maktab Ashraf